सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 136, नई दिल्ली, शुक्रवार 25 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 प्लास्टिक हब बनने की ओर भारत,1300 अरब डॉलर के बाजार में दावेदारी

06 ट्रंप आब सिर्फ कारोबारी

08 सड़कों पर उतरने से पहले अपनी सरकार के कामों की समीक्षा करें : बीजेपी

इन वाहनों पर ट्रैफिक पुलिस की ताबड़तोड़ कार्रवाई, कई गाड़ियों का कटा चालान

परिवहन विशेष न्यूज

पूर्वी दिल्ली नगर निगम ने पुलिस के साथ मिलकर सड़क पर अवैध पार्किंग के खिलाफ कार्रवाई की। इस दौरान चार कारें जब्त की गईं और 84 वाहनों के चालान काटे गए। सादतपुर वार्ड चांद बाग पुलिया शेरपुर चौक और जौहरीपुर में कार्रवाई की गई। निगम टीम ने दिलशाद गार्डन और ताहिरपुर से अतिक्रमण भी हटाया रेहड़ियां जब्त की गईं और ढाबों पर कोयले की भट्टी तोड़ी गई।

पूर्वी दिल्ली। नगर निगम के शाहदरा उत्तरी जोन ने पुलिस के साथ मिलकर बृहस्पतिवार को सड़क पर खड़े वाहनों को लेकर कार्रवाई की। चार कारें जब्त की गई और 84 वाहनों के चालान किए गए। कई स्थानों से अतिक्रमण भी हटाया गया।

सादतपुर वार्ड में चांद बाग पुलिया व शेरपुर चौक पर सड़क पर खड़ी दो कारों को निगम की टीम ने जब्त किया। वहीं पुलिस ने लोगों का रास्ता रोक रहे 80 वाहनों का चालान किया। इसी तरह जौहरीपुर में दो कारें जब्त की गई, जब्कि चार वाहनों के चालान किए गए।

निगम की टीम ने पाया कि यहां पर दुकानदार ही सड़कों पर वाहन खड़े करवा रहे थे। निगम की टीम ने लोगों से अपील की है कि वह वाहनों का अधिकृत पार्किंग में खड़ा करें। सड़क को पार्किंग न बनाएं, इससे बाकी लोगों को असुविधा होती है और जाम लगता है।

इसके साथ ही निगम के इस जोन की टीम ने दिलशाद गार्डन और ताहिरपुर से अतिक्रमण हटाया। यहां से रेहड़ियां जब्त की गईं। ढाबों पर कोयले वाली भट्टी को तोड़ा गया।

दिल्लीवाले ध्यान दें! 25 जुलाई से 8 अगस्त तक बंद रहेगा ये फ्लाईओवर; ट्रैफिक पुलिस की एडवाइजरी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने सरिता विहार फ्लाईओवर पर मरम्मत कार्य के चलते 25 जुलाई से 8 अगस्त तक बदरपुर से आश्रम तक का मार्ग आंशिक रूप से बंद रखने की एडवाइजरी जारी की। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) द्वारा 15 दिनों में मरम्मत कार्य पूरा किया जाएगा जिस दौरान फ्लाईओवर का आधा हिस्सा बंद रहेगा। यात्रियों को वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने की सलाह दी गई है ताकि असुविधा कम हो।

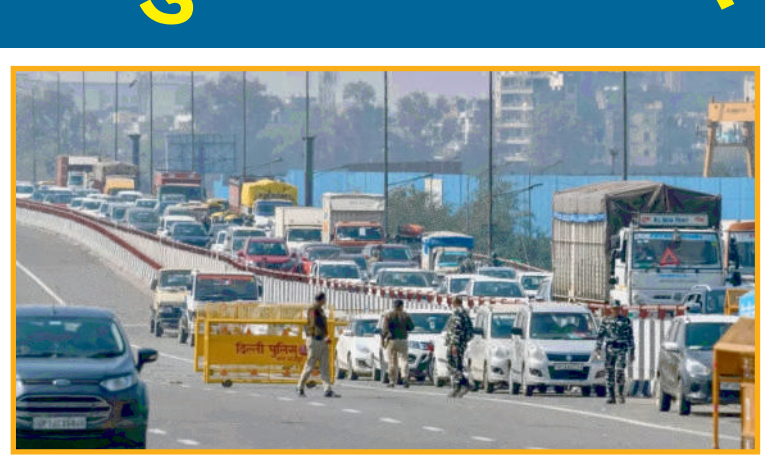

नई दिल्ली। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने गुरुवार को एक एडवाइजरी जारी कर कहा कि सरिता विहार फ्लाईओवर पर मरम्मत कार्य के चलते बदरपुर से आश्रम तक का मार्ग 25 जुलाई से आठ अगस्त के बीच आंशिक रूप से बंद रहेगा। एडवाइजरी के अनुसार, लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) 15 दिनों की अवधि में मरम्मत कार्य पूरा कर लेगा।

इस दौरान फ्लाईओवर का आधा हिस्सा वाहनों की आवाजाही के लिए बंद रहेगा। कैरिजवे का दूसरा आधा हिस्सा आंशिक यातायात को बनाए रखने के लिए चालू रहेगा। जनता की असुविधा को कम करने के उद्देश्य से जारी एडवाइजरी में यात्रियों से प्रभावित मार्ग से बचने और अन्य मार्गों का उपयोग करने का आग्रह किया गया है।

ट्रैफिक पुलिस की एडवाइजरी

बदरपुर बॉर्डर से मथुरा रोड होते हुए आश्रम की ओर जाने वाले वाहनों को वैकल्पिक मार्ग अपनाने की सलाह दी गई। फ्लाईओवर आंशिक रूप से बंद रहेगा। लोगों को एमबी रोड से होकर पुल प्रह्लादपुर और लाल कुआं होते हुए दाईं ओर मुड़ने की सलाह दी गई है।

वाहन चालक मां आनंदमई मार्ग की ओर मुड़ें। यहां से लोगों को क्राउन प्लाजा और गोविंदपुरी होते हुए आगे बढ़ने की सलाह दी गई। इसमें कहा गया है कि मोदी मिल की ओर दाएं मुड़ें और फिर बाएं मुड़कर मथुरा रोड से आश्रम की ओर जाएं।

फ्लाईओवर एक अन्य वैकल्पिक मार्ग में सरिता विहार फ्लाईओवर के निकट स्लिप रोड का उपयोग करें। ओखला रोड के लिए बाएं मुड़ें, फिर क्राउन प्लाजा पर दाएं मुड़ें और मां आनंदमई मार्ग और गोविंदपुरी मार्ग पर आगे बढ़ें।

एडवाइजरी में आगे कहा गया है कि बदरपुर से मथुरा रोड पर भारी और वाणिज्यिक वाहनों की आवाजाही बंद रहेगी। आपातकालीन वाहनों को अनुमति दी जाएगी, लेकिन संभावित भीड़भाड़ के कारण उन्हें इस मार्ग से दूर रहने की सलाह दी गई है।

राजधानी में पैदल चलना कितना खतरनाक? सामने आई रिपोर्ट में चौंकाने वाले खुलासे

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में पैदल चलना खतरनाक है क्योंकि सड़क दुर्घटनाओं में 35 प्रतिशत पैदल यात्री होते हैं। दिल्ली में ट्रैफिक व्यवस्था विविधतापूर्ण है। अध्ययन में असुरक्षित स्थितियों में तेज रफ्तार ट्रैफिक और फुटपाथ पर खड़ी गाड़ियां शामिल हैं। रिपोर्ट में फुटपाथों का सुधार सुरक्षित सड़क पार करने की सुविधाएं बढ़ाने के सुझाव दिए गए हैं। 2022 में 50 प्रतिशत पैदल यात्रियों की मौत सड़क दुर्घटना में हुई।

नईदिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में पैदल चलना भी जान जोखिम में डालने जैसा है। तेज ट्रैफिक में सड़क पार करना सबसे बड़ी चुनौती है। पैदल चलने वालों के लिए सुविधाओं का अभाव है और लोग डरकर सड़क पर चलते हैं।

हाल ही में हुए एक अध्ययन में सामने आया है कि दिल्ली में सड़क हादसों में मरने वालों में 35 प्रतिशत तक पैदल यात्री हो सकते हैं। अध्यन के मुताबिक, दिल्ली की कुल आबादी लगभग दो करोड़ है और यहां का ट्रैफिक व्यवस्था बहुत विविधतापूर्ण है। इसमें कार, ट्रक, दोपहिया, आटो रिक्शा जैसे मोटरवाहनों के साथ-साथ पैदल यात्री, साइकिल, पशु और मानव चालित वाहन भी शामिल हैं।

दिल्ली में प्रति व्यक्ति वाहन स्वामित्व देश में सबसे ज्यादा है। खासकर, दोपहिया वाहनों की संख्या में तेजी से वृद्धि के कारण सड़क दुर्घटनाओं में मौतों का अनुपात प्रति एक लाख जनसंख्या पर 9 मौतें हो गया है। दिल्ली के परिवहन अनुसंधान और चोट निवारण केंद्र (ट्रिप-सी), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) दिल्ली और यूनिवर्सिटी कालेज लंदन ने यह अध्ययन किया है।

'परसेप्शन ऑफ पेडेशट्रियन सेफ्टी इन दिल्ली

ए रैश एनालाइसिस एप्रोच' नामक अध्ययन में सामने आया है कि साल 2022 में कुल 1461 सड़क हादसों में से 43 प्रतिशत हादसे पैदल यात्रियों से जुड़े थे। हालांकि, स्वतंत्र शोधों के मुताबिक असल आंकड़ा और भी ज्यादा यानी 35 प्रतिशत तक हो सकता है। दूसरी तरफ, दिल्ली में 26.3 प्रतिशत लोग रोजमर्रा के सफर के लिए पैदल चलना पसंद करते हैं।

शोध में शामिल आइआइटी दिल्ली की प्रोफेसर गीतम तिवारी ने बताया कि दक्षिणी दिल्ली के आठ वार्डों में 426 पैदल यात्रियों से बातचीत पर आधारित इस अध्ययन में सामने आया कि पैदल चलने से जुड़ी 15 में से 12 स्थितियों को ₹असुरक्षित₹ माना गया।

इस अध्ययन में पाया गया कि पैदल यात्री अपने आसपास के माहौल से जुड़ी सुरक्षा खतरों को अच्छी तरह पहचानते हैं। उनकी यह धारणा उनकी उम्र, लिंग, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और पुराने अनुभवों पर निर्भर करती है। शोधकर्ताओं ने रैश विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया। यह तकनीक बताती है कि कोई व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति को कितना असुरक्षित महसूस करता है।

पैदल चलने वालों ने इन स्थितियों को बताया सहज

पैदल चलने वालों ने ऊंचे फुटपाथ और वहां स्ट्रीट वेंडरों की उपस्थिति को कम घातक बताया है। उन्होंने कहा है कि इससे उन्हें परेशानी नहीं होती। स्ट्रीट वेंडरों की उपस्थिति सुरक्षित माहौल देती है।

इन स्थितियों को बताया खतरनाक

पैदल चलने वालों ने मध्यवर्ती डिवाइडर (मेडियन) पर रुकने की मजबूरी को खराब बताया है। सबसे घातक तेज रफ्तार ट्रैफिक के बीच सड़क पार करने की चुनौती को माना है। इसी तरह फुटपाथ पर खड़ी गाड़ियों से पैदल राह में रुकावट को अहम बताया है।

इसके अलावा भारी यातायात वाले मार्गों को पार करने में डर, बस स्टाप के पास क्रासिंग की अनुपलब्धता से असुरक्षा, क्रासिंग के पास खड़े वाहनों के कारण दुर्घटना का खतरा, फुटपाथ पर मोटरसाइकिल व स्कूटर का चलना, भीड़भाड़ वाले फुटपाथ पर सुरक्षा की कमी, सूरज ढलने के बाद पैदल चलने में डर, सीसीटीवी कैमरे या सुरक्षा कैमरे न होने से डर, पुलिस या ट्रैफिक नियंत्रण की अनुपस्थिति और सड़क पर उचित स्ट्रीट लाइटिंग का अभाव को बड़े खतरे बताया है।

रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

फुटपाथों का सुधार और निरंतरता सुनिश्चित करनी होगी। सुरक्षित सड़क पार करने की सुविधाएं, जैसे ज़ेब्रा क्रासिंग, लाइटिंग और ट्रैफिक सिग्नल, बढ़ाए जाने चाहिए। महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए नीतियां बनाई जाएं। फुटपाथ से पार्किंग को हटाया जाए और उन्हें अतिक्रमण मुक्त बनाया जाए।

वहीं, योजना के तहत फुटपाथ पर स्ट्रीट वेंडर्स को लाया जाए। सड़क पार करने के लिए सुविधाएं बढ़ाई जाएं। दोपहिया वाहनों को फुटपाथ पर चलने से रोका जाए। आइआरसी के मानक के अनुरूप 15 सेंटीमीटर ऊंचे ही फुटपाथ बनाए जाएं।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि सुरक्षा को लेकर महिलाओं और पुरुषों में सोच अलग थी। महिलाएं मेडियन पर ज़्यादा निर्भर दिखीं और खड़ी गाड़ियों व रेलिंग की अनुपस्थिति को लेकर अधिक चिंतित रहीं।

क्या कहते हैं एनसीआरबी और पुलिस के आंकड़ें

2022 (एनसीआरबी/दिल्ली सड़क दुर्घटना औसत रिपोर्ट)

दिल्ली में 2022 में कुल सड़क दुर्घटना मौतें: 1,571

इनमें पैदल यात्रियों की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत रही यानी करीब 785 लोग मारे गए।

2023 (दिल्ली पुलिस रिपोर्ट)

2023 में सड़क दुर्घटना मौतों की संख्या घटकरः 1,257 रह गई।

इनमें पैदल यात्रियों की हिस्सेदारी 43 प्रतिशत रही यानी लगभग 540 मौतें दर्ज हुईं।

देवी, वाराही देवी के 9 रूप

वराहमुखी दिव्य माता, सुरक्षा, शक्ति और रहस्यों की देवी।

बहुत कम लोग जानते हैं कि वे 9 अद्भुत रूपों में प्रकट होती हैं, जिनमें से प्रत्येक की एक अनूठी ब्रह्मांडीय भूमिका है।

1. लघु वाराही

₹सूक्ष्म रूप₹ - तांत्रिक अनुष्ठानों में उनकी पूजा की जाती है।

क्रिया में तीव्र, रक्षा में प्रचंड।

वे गुप्त ज्ञान प्रदान करती हैं और छिपे हुए शत्रुओं का नाश करती हैं।

आह्वान का सर्वोत्तम समयः मध्यरात्रि और अमावस्या।

2. स्वप्न वाराही

स्वप्नों की देवी।

वे दिव्य संदेश या चेतावनियाँ देने के लिए सूक्ष्म लोकों और स्वप्न अवस्थाओं में प्रकट होती हैं।

अवचेतन मन की मौन रक्षक।

स्पष्टता, अंतर्ज्ञान और गुप्त अंतर्दृष्टि के लिए पूजी जाती हैं।

3. महिषारुढ़ा वाराही

भैंसे पर सवार होकर, वे अहंकार और अज्ञान - हमारे भीतर के महिष - का नाश करती हैं।

वे अभिमान के आंतरिक दानव को दूर करती हैं।

अहंकार और भ्रम से जूझ रहे लोगों के लिए आदर्श।

4. उन्मत्त वाराही

₹प्रवण रूप₹ - जंगली, अप्रत्याशित, शक्तिशाली।

वह कर्म, रोग और बुरी नज़र को भस्म कर देती है।

तामसिक प्रकृति की - लेकिन अग्नि से शुद्ध करती है।

सावधानः वह अधर्म के लिए शीघ्र और निर्दयी होकर कार्य करती है।

5. महावाराही

परम रूप- शांत किन्तु प्रभावशाली।

अनेक भुजाओं से युक्त और दिव्य कृपा से युक्त।

वह आध्यात्मिक विकास को सांसारिक शक्ति के साथ संतुलित करती हैं।

योगियों, साधकों और नेताओं के लिए आदर्श।

6. अथी वाराही

आदि रूप- वह ब्रह्मांड से भी पहले से विद्यमान थीं।

सृष्टि, ध्वनि और दिव्य इच्छा से जुड़ी।

वाराही वंश की उत्पत्ति।

आध्यात्मिक पुनर्जन्म और मोक्ष के लिए पूजा।

7. अश्वारूढ़ा वाराही

सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर, वह आयामों से होकर तेज़ी से गुज़रती है।

युद्धों, कानूनी मुकदमों और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में विजय प्रदान करती हैं।

वह धर्मी विजय की देवी हैं।

8. सिंहारुढ़ा वाराही

शक्तिशाली सिंह पर सवार, यह रूप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

साहस, न्याय और दिव्य गर्जना का प्रतीक।

वह भक्त के भीतर शक्ति को जागृत करती हैं।

योद्धाओं, नेताओं और धर्म योद्धाओं के लिए आदर्श।

9. मोक्षदायी वाराही

आधी रात को, वह अस्तित्व के युद्धक्षेत्र में एक भोज का आयोजन करती है।

व्यंजन?

अहंकार का भुना हुआ मांस, शुद्ध चेतना की किण्वित मदिरा, और समर्पित इच्छाशक्ति की मिठाइयाँ।

केवल वे ही अमरता का स्वाद चखेंगे जो उसकी मेज़ पर भोजन करने का साहस करेंगे।

9. नौ रूपों का रहस्य।

वाराही का प्रत्येक रूप नवग्रहों, चक्रों और तत्वों में से किसी एक से जुड़ा है।

वह श्री विद्या, तंत्र और ब्रह्मांडीय सुरक्षा के पीछे की मौन शक्ति हैं।

उनकी पूजा करें, और कोई भी काला जादू या बुरी शक्ति आपको छू नहीं सकती।

10. देवी वाराही की केवल पूजा नहीं की जाती - उनका अनुभव किया जाता है।

यदि आप उनकी ओर आकर्षित होते हैं, तो यह जान लेंः

वह अपने भक्तों को चुनती हैं। इसके विपरीत नहीं।

विस्मृत देवियों, सनातन ज्ञान और गूढ़ ज्ञान पर सुरक्षा के लिए ₹ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाराही दंडायै नमः₹ का जाप करें।

शिवरात्रि पर ऑनलाइन रुद्राभिषेक बना आस्था का माध्यम

राखी गुप्ता ने बनाया आकर्षक पार्थिव शिवलिंग

गनियारी,बिलासपुर,छत्तीस गढ़। श्रावण मास की शिवरात्रि के पावन अवसर पर सुप्रसिद्ध कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा द्वारा ऑनलाइन रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया। यह विशेष आयोजन उनके आधिकारिक यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से लाइव प्रसारित किया गया, जिसे लाखों श्रद्धालुओं ने घर बैठे देखा और पूजा-अर्चना की।

इस आयोजन में दूध, दही, शहद, घी, गंगाजल एवं विभिन्न औषधियों से भगवान शिव का विधिवत अभिषेक किया गया। ऑनलाइन दर्शन कर रहे श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों में दीप जलाकर, बेलपत्र अर्पित कर और 'ॐ नमः शिवाय' का जप कर शिवरात्रि को भक्तिभाव से मनाया। इस अवसर पर गनियारी निवासी राखी गुप्ता द्वारा सुंदर सा पार्थिव शिवलिंग बनाया गया एवं सपरिवार पूजा की गई।

पंडित प्रदीप मिश्रा, जो अपने सरल और भावपूर्ण शिव कथा वाचन के लिए प्रसिद्ध हैं, ने रुद्राभिषेक का प्रारंभ मंगलाचरण एवं मंत्रोच्चारण से किया। उन्होंने श्रद्धालुओं को शिव आराधना का महत्व समझाते हुए कहा कि ₹शिवरात्रि का यह दिन आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति का अवसर है। रुद्राभिषेक से मन की शांति और पुण्य की प्राप्ति होती है।" इस आयोजन में दूध, दही, शहद, घी, गंगाजल एवं विभिन्न औषधियों से भगवान शिव का विधिवत अभिषेक किया गया। ऑनलाइन दर्शन कर रहे श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों में दीप जलाकर, बेलपत्र अर्पित कर और 'ॐ नमः शिवाय' का जप कर शिवरात्रि को भक्तिभाव से मनाया।

कार्यक्रम के अंत में पंडित मिश्रा ने शिव महिम्न स्तोत्र, रुद्राष्टक और शिव तांडव स्तोत्र का पाठ करते हुए विश्व कल्याण की कामना की। उन्होंने भक्तों से आह्वान किया कि वे शिवरात्रि के इस पावन पर्व पर संयम, सेवा और श्रद्धा के साथ जीवन जीने का संकल्प लें। ये ऑनलाइन रुद्राभिषेक आयोजन भक्तों के लिए एक दिव्य अनुभव रहा, जिसमें आस्था, भक्ति और तकनीक का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस अवसर पर सत्या गुप्ता, आरती, राखी गुप्ता, राजकुमारी गुप्ता, श्वेता मिश्रा, आँचल, खुशबू और रुचि उपस्थित थे।

सावन मास की अमावस्या को ही हरियाली अमावस्या

इस दिन स्नान, दान और शिव पूजन और पितृों का तर्पण किया जाता है। इस दिन शिव पूजन का भी विशेष महत्व है, क्यों कि यह सावन की अमावस्या है, इस दिन भगवान शिव को बेलपत्र, फल आदि अर्पित कर उनका रुद्राभिषेक कराना भी उत्तम रहता है। इस अमावस्या का नाम ही हरियाली अमावस्या है, इस दिन पेड़ लगाने से भी शुभ फल मिलता है। खासकर आम, आंवला, बड़ का पेड़ आदि लगाने चाहिए। इस दिन सबसे पहले स्नान करके काले तिल और जल से पितरों का तर्पण देना चाहिए, इससे पितर प्रसन्न होते हैं। इससे पितृ दोष से मुक्ति मिलती है और परिवार में सुख-शांति बनी रहती है। हरियाली अमावस्या के दिन पितरों के नाम की दीपदान बहुत शुभ माना जाता है। पितरों के लिए किसी तालाब या पवित्र नदी के किनारे अपने पितरों के नाम का दीपक जरूर जलाएं। इसके अलावा शाम के समय आप पीपल के पेड़ के पास भी दीपक जला सकते हैं, क्योंकि इसमें ब्रह्मा विष्णु, महेश तीनों देवताओं का वास माना जाता है। इससे भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की कृपा मिलती है।*

हरियाली अमावस्या का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है. यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि हम प्रकृति के ऋणी हैं और हमें इसे सुरक्षित रखने के लिए पूरा प्रयास करना चाहिए.

वात पित्त कफ को सम रखने के एव ठीक करने के सरल उपायः-

जीवन में वात पित्त और कफ के बिगड़ने पर ही रोग आते है

-वात (वायु) शरीर मे सुबह को बढ़ता है

-पित्त (अम्लता) शरीर मे दोपहर को बढ़ता है

-कफ (बलगम) शरीर मे रात को बढ़ता है

-नाभि से लेकर पैरों तक वात के रोग है

-नाभि से लेकर छाती तक पित्त के रोग है

-छाती से लेकर सिर तक कफ के रोग है

इन तीनो दोषों को सम पर रखने के सरल उपाय, यदि कोई खानपान में थोड़ा सा बदलाव करे तो जीवनपर्यंत निरोगी रह सकता है

वातः-

-तेल शुद्ध खाये,सबसे अच्छा सरसों का है

-दूध, देशी गाय का शुद्ध खाये

-संतरा, मौसमी, गन्ने का जूस ,टमाटर, अंगूर आदि खायें

पित्तः-

-देशी गाय का घी शुद्ध खायें

-छाछ का सेवन करे

-दोपहर को भोजन में अजवाइन जरूर डाले

-अजवाइन नही डालते हो तो भोजन के बाद एक चुटकी अजवाइन काले नमक के साथ खाएं

-काले जीरे का प्रयोग करे

-हींग का प्रयोग करे

-धनिया का प्रयोग करें, हरा हो या सूखा

कफः-

-गुड़ खाये

-शहद खाये

-सोंठ खाये

-सौंफ खाये

-पान का पत्ता खाए

आवंला इन तीनो दोषों को अकेला ही ठीक रखता है

देशी गाय का गौमूत्र वात और कफ के रोग एव कुछ आयुर्वेदिक उपाय के साथ पित्त के रोग ,इन तीनों दोषों से होने वाले 148 रोगों को अकेला ही ठीक कर देता है।

नक्त व्रत आज

व्रत कितने प्रकार के होते हैं?

==========

'नक्त व्रत' रात में किया जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि विशेष रूप से रात होने पर इस व्रत को करे। संन्यासी तथा विधवा सूर्य की मौजूदगी में यह व्रत रखें।

व्रत के प्रकार

=========

व्रत कई प्रकार के होते हैं जैसे एकभुक्त, नक्त, चान्द्रायण, अयाचित आदि। इन्हें रखने का अपना तरीका और नियम होता है। व्रती को चाहिए कि वो पूरे विधि विधान से व्रत कार्य को पूर्ण करे। इस लेख में हम व्रत के प्रकार को प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह सभी व्रत – मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, समय और देवपूजा से सहयोग रखते हैं। यथा–वैशाख, कार्तिक और माघ के 'मास' व्रत। शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष के 'पाक्षिक' व्रत। चतुर्थी, एकादशी और अमावस्या आदि के 'तिथि' व्रत। सूर्य, सोम और मंगल आदि के 'वार' व्रत। श्रवण, अनुराधा और रोहिणी आदि के 'नक्षत्र' व्रत। व्यतीपातादि के 'योग' व्रत। भद्रा आदि के 'करण' व्रत और गणेश, विष्णु आदि के 'देव' व्रत स्वतंत्र हैं।

एकभुक्त

======

'एकभुक्त व्रत' के तीन भेद हैं—स्वतंत्र, अन्यांग और प्रतिनिधि। आधा दिन – होने पर 'स्वतंत्र' एकभुक्त होता है, मध्याह्न में 'अन्यांग' किया जाता है और प्रतिनिधि आगे-पीछे हो सकता है।

नक्त

====

'नक्त व्रत' रात में किया जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि विशेष रूप से रात होने पर इस व्रत को करे। संन्यासी तथा विधवा सूर्य की मौजूदगी में यह व्रत रखें।

अयाचित

=======

'अयाचित व्रत' में बिना मांगे अर्थात याचना किए बगैर जो कुछ भी मिले, उसी से निषेधकाल बचाकर दिन या रात में जब भी अवसर (केवल एक बार) मिले, भोजन करें। यहां यह स्मरणीय है कि भितभुक्त में प्रतिदिन दस ग्रास भोजन करें। अयाचित और मितभुक, दोनों ही व्रत परम सिद्धि देने वाले हैं।

चान्द्रायण

=======

चन्द्र की प्रसन्नता, चन्द्रलोक की प्राप्ति या पापों की निवृत्ति के लिए 'चान्द्रायण' व्रत किया जाता है। यह व्रत चन्द्रकला के समान बढ़ता-घटता है।

इसे इस प्रकार समझे—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को एक, द्वितीया को दो, तृतीया को तीन-इस क्रम से रोज एक-एक ग्रास बढ़ाते हुए पूर्णिमा को 15 ग्रास भोजन करें, फिर इस क्रम को अगले पक्ष में एक-एक ग्रास घटाते रहें। अर्थात कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को चौदह, द्वितीया को तेरह, तृतीया को बारह, इसी क्रम में घटाकर चतुर्दशी (चौदस) को एक और अमावस्या को निराहार रहने से एक 'चान्द्रायण' होता है। यह 'यवमध्य चान्द्रायण' है।

यवमध्य क्या है?

==========

यव का अर्थ है—जौ का दाना। जैसे जौ आदि धान्य अंत में पतला और मध्य में मोटा होता है, उसी प्रकार एक ग्रास से आरम्भ कर मध्य तक पन्द्रह ग्रास कर फिर धीरे-धीरे एक-एक ग्रास घटाकर अगले पन्द्रहवें दिन तक एक ग्रास पर आ जाना, वहीं यह समाप्त होता है। यवमध्य चान्द्रायण किसी मास की शुक्ल प्रतिपदा से ही शुरू किया जाता है।

प्राजापत्य

=======

'प्राजापत्य' बारह दिन का होता है। इसमें व्रत के पहले तीन दिनों में प्रतिदिन बाइस ग्रास भोजन करना चाहिए, फिर तीन दिन तक प्रतिदिन छब्बीस ग्रास भोजन करें, फिर तीन दिन तक आपाचित (पूरी तरह पकाया हुआ) अन्न का चौबीस ग्रास भोजन करें, तत्पश्चात तीन दिन बिल्कुल निराहार रहें। इस प्रकार बारह दिन में एक 'प्राजापत्य' होता है। यहां ग्रास से तात्पर्य जितना मुंह में आ सके, उतने से है।

कायिक

======

शास्त्राघात, मर्माघात और कार्यहानि आदि जनहित हिंसा के त्याग से कायिक व्रत होता है।

वाचिक

======

सत्य भाषण व प्राणीमात्र में निवैर रहने से वाचिक व्रत होता है।

मानसिक

======

मन को शांत रखने की दृढ़ता से मानसिक व्रत होता है।

नित्य

====

पुण्य संचय के एकादशी आदि 'नित्य' व्रत जिन्हें लम्बे समय तक किया जाता है।

काम्य

=====

सुख-सौभाग्य के लिए वट-सावित्री आदि काम्य व्रत माने गए हैं।

विश्व में सबसे ऊंचाई पर स्थित है उत्तराखंड का यह शिव मंदिर, जानिए मंदिर का इतिहास

अनन्या मिश्रा

हमारे देश में भगवान शिव को समर्पित कई प्राचीन मंदिर हैं। ऐसे में अगर आप भी भगवान शिव के मंदिर जाने का प्लान कर रहे हैं, तो आपको उत्तराखंड में स्थित तुंगनाथ मंदिर जरूर जाना चाहिए। तुंगनाथ मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है।

हिंदू शास्त्रों में भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा का विशेष महत्व माना जाता है। महादेव को सोमवार का दिन समर्पित है। इसलिए इस दिन श्रद्धालु सुबह भगवान शिव की पूजा करते हैं। वहीं कई भक्त दर्शन के लिए भगवान शिव के मंदिर जाने का प्लान बनाते हैं। हमारे देश में भगवान शिव को समर्पित कई प्राचीन मंदिर हैं। ऐसे में अगर आप भी भगवान शिव के मंदिर जाने का प्लान कर रहे हैं, तो आपको उत्तराखंड में स्थित तुंगनाथ मंदिर जरूर जाना चाहिए। तुंगनाथ मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। यह मंदिर पंच केदारों में भी शामिल है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको तुंगनाथ मंदिर से जुड़ी कुछ खास बातें बताने जा रहे हैं।

तुंगनाथ मंदिर का इतिहास

धार्मिक मान्यता के मुताबिक तुंगनाथ मंदिर का निर्माण पांडवों ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए किया था। इस मंदिर को भारतीय वास्तुकला शैली में बनाया गया है।

इसी स्थान में भगवान शिव को पार्वती ने पति के रूप में पाने के लिए तपस्या की थी। वहीं अन्य मान्यता के अनुसार, रावण का अंत करने के बाद भगवान श्रीराम ने इसी स्थान पर तपस्या की थी। क्योंकि रावण ब्राह्मण था, जिस कारण श्रीराम पर बह्महत्या का दोष लगा था। इस दोष से मुक्ति पाने के लिए श्रीराम ने तपस्या की थी।

तुंगनाथ मंदिर से कुछ ही दूरी पर चंद्रशिला मंदिर है। चंद्रशिला मंदिर के दर्शन न करने से तुंगनाथ मंदिर के दर्शन अधूरे माने जाते हैं। यह मंदिर समुद्र तल से करीब 3,680 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस मंदिर की सुंदरता खास है। वहीं नवंबर और मार्च के बीच में अधिक बर्फबारी होने की वजह से तुंगनाथ मंदिर बंद कर दिया जाता है। यह भगवान शिव के प्रमुख मंदिरों में शामिल है।

ऐसे पहुंचे तुंगनाथ मंदिर

अगर आप भी तुंगनाथ मंदिर जाना चाहते हैं, तो इसके लिए हवाई मार्ग, रेल मार्ग या फिर सड़क मार्ग द्वारा आप आसानी से मंदिर पहुंच सकते हैं।

अगर आप हवाई मार्ग द्वारा जाने के लिए तुंगनाथ मंदिर के पास देहरादून का जॉली ग्रांट हवाई अड्डा है। आप यहां पर कैब के जरिए चोपता के पास पैंगर गांव तक पहुंच सकते हैं।

आप चाहें तो ट्रेन के जरिए भी मंदिर पहुंच सकते हैं। मंदिर के पास नजदीकी देहरादून, हरिद्वार या ऋषिकेश स्टेशन हैं। जहां से आप टैक्सी या बस के जरिए चोपता पहुंच सकते हैं। वहीं आप चाहें तो बस की भी सहायता ले सकते हैं। बस से आप पैंगर गांव पहुंच सकते हैं।

मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने किया आरोग्य मंदिर का उद्घाटन

सुषमा रानी

नई दिल्ली, परिवहन विशेष। वीरवार को दिल्ली की मुख्यमंत्री ने 34 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों और 8 जन औषधि केंद्रों का भी उद्घाटन किया।

उन्होंने कहा कि अब लोगों को अपॉइंटमेंट लेने के लिए कतार में लगने की जरूरत नहीं होगी। लोग ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री ने 34 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों और 8 जन औषधि केंद्रों का भी उद्घाटन किया।

सीएम रेखा गुप्ता ने HIMS को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में पारदर्शिता और दक्षता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह दिल्ली के लोगों के लिए बहुत बड़ी राहत है। अब उन्हें लंबी कतारों में खड़े होने या दर-दर भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सब कुछ डिजिटल हो रहा है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में 93 लाख से ज्यादा आभा आईडी पहले ही बनाई जा चुकी हैं। हर मरीज का हेल्थ डेटा अब डिजिटल रूप से दर्ज किया जाएगा। इससे डॉक्टरों के लिए प्रभावी इलाज करना आसान हो जाएगा। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म अस्पतालों, डॉक्टरों और मरीजों को एक नेटवर्क पर जोड़ेगा।

पिछली आप सरकार पर निशाना साधते हुए सीएम गुप्ता ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा के नाम पर हजारों करोड़ रुपए खर्च किए गए, लेकिन एक भी परियोजना पूरी नहीं हुई। उन्होंने कहा कि कोविड आया और चला गया, लेकिन वे एक भी अस्पताल चालू नहीं कर पाए। वे नींव के खंभे और लोहे के पोर्टा केबिन छोड़ गए। न दवाइयां थीं, न डॉक्टर और न ही कोई जवाबदेही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली को सुपर-स्पेशलिटी अस्पतालों और आधुनिक सुविधाओं के केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि देश भर से लोग अच्छे इलाज के लिए यहां आएं। अधिकारियों ने बताया कि नेक्स्टजेन ई-हॉस्पिटल सॉफ्टवेयर पर आधारित HIMS, आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (ABHA) आईडी को एकीकृत करता है। इससे मरीजों के हेल्थ डेटा की सुरक्षित और केंद्रीकृत ट्रैकिंग हो पाती है।

अधिकारियों के अनुसार एचआईएमएस मरीजों को ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक करने, डिजिटल ओपीडी स्लिप प्राप्त करने और रीयल टाइम में अपने हेल्थ रिकॉर्ड जानने की सुविधा प्रदान करेगा। अधिकारियों ने बताया कि यह सुविधा 35 सरकारी अस्पतालों में ओपीडी पंजीकरण के लिए पहले से ही उपलब्ध है। जल्द ही इसे चरणबद्ध तरीके से सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में लागू किया जाएगा।

मुख्यमंत्री द्वारा गुरुवार को उद्घाटन किए गए 34 आयुष्मान आरोग्य मंदिर शिलामपुर, कालकाजी, बुराड़ी, यमुना विहार, गांधी नगर, मालवीय नगर, शकूर बस्ती, पश्चिम विहार और बेगमपुर सहित अन्य इलाकों में स्थित हैं। अधिकारियों ने बताया कि ये केंद्र टीकाकरण, मातृ एवं शिशु देखभाल, हेल्थ एडवाइस और योग सेशन सहित कई प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेंगे।

दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज सिंह ने कहा कि सरकार ने एक महीने के भीतर कुल 68 आयुष्मान आरोग्य मंदिर स्थापित किए हैं। कहा कि दिल्ली के स्वास्थ्य ढांचे को तेजी से मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार नतीजे देने और वर्षों से अटकीं अधूरी परियोजनाओं को पूरा करने पर केंद्रित है। यह विज्ञापनों की सरकार नहीं, बल्कि काम करने वाली सरकार है।

सिंह ने कहा कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के कल्याण के लिए सरकारी अस्पतालों में 8 नए जन औषधि केंद्र खोले गए हैं। ये केंद्र सस्ते दरों पर जरूरी दवाइयां उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने कहा कि इस साल की शुरुआत में ऐसे 17 केंद्र खोले गए थे। आने वाले महीनों में और भी केंद्र खोले जाएंगे।

दिल्लीवालों के लिए अच्छी खबर, कांग्रेस ने शुरू की दो बड़ी योजनाएं; महिलाओं को मिलेगा लाभ

दिल्ली प्रदेश महिला कांग्रेस ने राजधानी की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रियदर्शिनी उड़ान योजना और प्रियदर्शिनी सिलाई योजना की शुरुआत की है। उड़ान योजना में महिलाओं को सेनेटरी पैड बनाने का कार्य मिलेगा जबकि सिलाई योजना के तहत हर जिले में सिलाई केंद्र खुलेंगे। कांग्रेस का लक्ष्य इन योजनाओं को हर विधानसभा तक पहुंचाना है जिससे महिलाओं का सशक्तिकरण हो सके।

नई दिल्ली। प्रदेश महिला कांग्रेस अब राजधानी की महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में भी काम करेगी। इसी कड़ी में अखिल भारतीय महिला कांग्रेस अध्यक्ष अलका लांबा ने बृहस्पतिवार को दो योजनाओं की शुरुआत की।

"प्रियदर्शिनी उड़ान योजना" के तहत महिलाओं को सेनेटरी पैड बनाने का कार्य दिया जाएगा, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। "प्रियदर्शिनी सिलाई योजना" के अंतर्गत दिल्ली के हर जिले में सिलाई केंद्र स्थापित किए जाएंगे और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जाएगा।

इंदिरा भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि दिल्ली कांग्रेस इन योजनाओं को हर विधानसभा तक ले जाएगी एवं राजनीति में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करेगी।

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी काजी निजामुद्दीन ने कहा कि महिला कांग्रेस आज दिल्ली सहित देशभर में महिला सशक्तिकरण के नए आयाम रच रही है। वहीं दिल्ली महिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पा सिंह ने कहा कि दिल्ली में प्रियदर्शिनी सिलाई केंद्र खोले जाएंगे।

इन केंद्रों में महिलाओं को आर्थिक न्याय के तहत सिलाई-कढ़ाई का काम दिया जाएगा। इस अवसर पर सभी जिलों में सिलाई मशीनों का वितरण भी किया गया।

इस अवसर पर महिला कांग्रेस ने यह भी घोषणा की कि "प्रियदर्शिनी उड़ान योजना" के अंतर्गत दिल्ली की प्रत्येक विधानसभा में हर महीने मुफ्त सेनेटरी पैड वितरित किए जाएंगे। कार्यक्रम में उन महिलाओं को, जो सेनेटरी पैड बना रही है, उन्हें चेक द्वारा महिला कांग्रेस द्वारा धनराशि भी दी गई।

कलर येलो और भानुशाली स्टूडियोज लिमिटेड की साझेदारी की धमाकेदार शुरुआत – एक थ्रिलिंग जॉनर-ब्लेंडर 'तू या मैं' के साथ

मुख्य संवाददाता

भारतीय सिनेमा में एक नए और साहसी अध्याय की शुरुआत करते हुए, निर्देशक आनंद एल राय की प्रोडक्शन कंपनी कलर येलो ने विनोद भानुशाली की भानुशाली स्टूडियोज लिमिटेड के साथ हाथ मिलाया है। यह साझेदारी उन कहानियों को बढ़ावा देगी जो नई आवाज़ें, जॉनर की सीमाओं को तोड़ती सोच, और बड़े पर्दे के अनुभव के लायक सिनेमाई कहानियों को सामने लाएगी।

इस सहयोग की पहली पेशकश है तू या मैं – एक हाई-कॉन्सेप्ट, हाई-इमोशन रोडेट-फ्राइटर फिल्म जो किसी एक श्रेणी में नहीं बंधती। शनाया कपूर और आदर्श गौरव की नई और रोमांचक जोड़ी के साथ यह फिल्म बिजॉय नांबियार के निर्देशन में बनी है, और यह एक ऐसे जॉनर-ट्विस्ट का वादा करती है जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। एक मीट-क्यूट से शुरू होकर कहानी एक सर्वाइवल थ्रिलर में बदल जाती है – पृष्ठभूमि में संगीत, पागलपन और प्रकृति की अनिश्चितता का तूफ़ान।

भावनाओं से भरी और धारदार तू या मैं रोमांस और सर्वाइवल को एक ऐसे नैरेटिव में मिलाती है जो जॉनर की सीमाओं को तोड़ता है। फिल्म में अनप्रेडिक्टेबल ट्विस्ट्स, दमदार म्यूजिक स्कोर, रैपर्स, बीट ड्रॉप्स और वाइब्रेंट साउंड डिजाइन है – जो थियेटर में देखने का एक नया, बोल्ड अनुभव लेकर आता है। युवा दर्शकों के लिए यह एक फ्रेश और हाई-कॉन्सेप्ट सिनेमा का परफेक्ट पैकेज है।

प्रोड्यूसर्स आनंद एल राय, हिमांशु शर्मा, विनोद भानुशाली और कमलेश भानुशाली एक ऐसी कहानी को समर्थन दे रहे हैं जो जितनी इमोशनली लेयर्ड है, उतनी ही विजुअली मंत्रमुग्ध कर देने वाली। राय और शर्मा की इनसानी जड़ों से जुड़ी कहानी और नांबियार की स्टाइलिश गहराई – दोनों का मेल इसमें देखने को मिलेगा। फिल्म वेलेंटाइन्स डे 2026 पर रिलीज़ के लिए तय की गई है और पहले से ही इसे अगले साल की सबसे चर्चित फिल्मों में से एक माना जा रहा है।

कलर येलो के आनंद एल राय ने कहा, "हर फिल्म के साथ हम ये तलाशते हैं कि कहानियाँ कितनी नई और अलग तरह से महसूस करवाई जा सकती हैं। तू या मैं उसी दिशा में एक साहसी और चौंकाने वाला कदम है। भानुशाली स्टूडियोज के साथ इस साझेदारी की शुरुआत करके मुझे बेहद खुशी है क्योंकि वे भी अप्रत्याशित को खोजने में विश्वास रखते हैं।"

भानुशाली स्टूडियोज लिमिटेड के विनोद भानुशाली ने कहा, "हम जो भी करते हैं, उसके केंद्र में सिर्फ एक ही भावना है – ऐसी कहानियाँ सुनाना जो लोगों के दिलों को छू जाएँ। कलर येलो के साथ यह साझेदारी हमारी इसी रचनात्मक सोच और रिस्क लेने के जज़्बे पर बनी है। तू या मैं के साथ हम एक बेहद रोमांचक, भावनात्मक और साहसी ज़ोन में कदम रख रहे हैं।"

लेगाक्सी और एम3एम फाउंडेशन ने 'पिकल-प्रोज़' को भारत के पिकल बॉल के भविष्य को सशक्त बनाने के लिए दिग्गजों को एकजुट किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। इस दूरदर्शी सहयोग के केंद्र में एक साहसिक मिशन हैः दुनिया के सबसे तेज़ी से बढ़ते खेलों में से एक पिकलबॉल को राष्ट्रीय सुर्खियों में लाना और इसे भारत के अगले बड़े खेल जुनून में बदलना। उद्देश्य और खेल के एक शक्तिशाली मिश्रण के साथ, पिकल प्रोज़ शहरी, ग्रामीण और जमीनी स्तर पर शीर्ष-स्तरीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण का नेतृत्व करेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि भारत का हर कोना इस गतिशील खेल तक पहुँच सके और इसे अपना सके। अगले तीन वर्षों में, यह पहल पूरे भारत में अत्याधुनिक पिकल बॉल कोर्ट स्थापित करेगी, जिससे पिकल बॉल एक उभरते हुए चलन से एक मुख्यधारा, जन आंदोलन में बदल जाएगी - एक ऐसा आंदोलन जो समावेशी, आकर्षक और सभी के लिए सुलभ हो।

यह एक खेल पहल से कहीं बढ़कर है। यह एक नई विरासत की शुरुआत है। पिकल प्रोज़ में आपका स्वागत है — जहाँ जुनून, क्षमता से मिलता है और भारतीय खेलों का भविष्य उड़ान भरता है। पहली बार, भारत के तीन प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी — इशांत शर्मा, भुवनेश्वर कुमार और उमेश यादव — पिकल प्रोज़ के लिए एकजुट हुए हैं, और अपने प्रभाव और जुनून का इस्तेमाल करके भारत में भागीदारी को प्रोत्साहित करने और एक सक्रिय, समावेशी खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। पिकल प्रोज़ का लक्ष्य इस खेल के इर्द-गिर्द एक जीवंत, समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करके भारत को पिकल बॉल के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करना है। यह पहल विश्वस्तरीय कोर्ट का एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क तैयार करेगी, जिसमें जमीनी स्तर के विकास को उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचे के साथ जोड़ा जाएगा। टूर्नामेंट, प्रशिक्षण शिविर और समुदाय-संचालित कार्यक्रमों की मेजबानी करके, पिकल प्रोज़ सभी उम्र और कौशल स्तरों के खिलाड़ियों को शामिल करेगा — जिससे पिकल बॉल एक महत्वाकांक्षी और सुलभ खेल बन जाएगा।

एम3एम फ़ाउंडेशन की अध्यक्ष और ट्रस्टी डॉ. पायल कनोडिया ने इस अवसर पर कहा, "एम3एम फ़ाउंडेशन में, हमारा मानना है कि खेल सिर्फ़ खेल नहीं है - यह बदलाव का एक शक्तिशाली उत्प्रेरक है। पिकल प्रोज़ के माध्यम से, हम एक ऐसे आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं जो सक्रिय और स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है और साथ ही विकास, समावेशिता और सामुदायिक सशक्तिकरण के नए रास्ते खोलता है। यह सहयोग उद्देश्य-संचालित प्रभाव के प्रति हमारी गहरी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है - जहाँ खेला जाने वाला हर खेल अवसर, स्वास्थ्य और एकजुटता की भावना से ओतप्रोत होता है।"

लेगैक्सी के संस्थापक और सीईओ अमितेश शाह ने कहा, रपिकल प्रोज़ एक खेल पहल से कहीं बढ़कर है - यह एक ऐसा आंदोलन है जो सुलभता, उत्कृष्टता और आनंद का जश्न मनाता है। इस विज़न के समर्थन में पहली बार तीन क्रिकेट दिग्गजों को एक साथ लाना इसके महत्व और क्षमता का प्रमाण है।

इशांत शर्मा ने कहा, रपिकल प्रोज़ का हिस्सा बनना मुझे उत्साहित करता है क्योंकि यह एक ही खेल में फिटनेस, मनोरंजन और समुदाय का संगम है।

भुवनेश्वर कुमार ने कहा, रपिकल प्रोज़ सिर्फ़ खेलने से कहीं बढ़कर है - यह एक ऐसा सकारात्मक माहौल बनाने के बारे में है जहाँ हर कोई, चाहे उसकी उम्र या पृष्ठभूमि कुछ भी हो, पैडल उठाकर खेलने के लिए स्वागत महसूस करे।

उमेश यादव ने कहा, रखेल में जीवन बदलने की शक्ति है, और पिकल प्रोज़ उस शक्ति को पूरे भारत में समुदायों तक पहुँचाता है।

पिकल प्रोज़ को हर स्तर पर संभावनाओं को उजागर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है - मनोरंजन, फिटनेस और जुड़ाव के अवसर पैदा करते हुए, वैश्विक पिकलबॉल मंच पर भारत की उपस्थिति को मज़बूत करते हुए।

एम3एम फाउंडेशन, एम3एम समूह की एक परोपकारी शाखा है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने वाले समतापूर्ण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यह फाउंडेशन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण, आपदा प्रबंधन, कौशल विकास और सामुदायिक कल्याण जैसे प्रमुख क्षेत्रों में काम करता है। आईएमपावर, लक्ष्य, सर्वोदय, साक्षर और संकल्प जैसे कार्यक्रम भारत भर के समुदायों को सतत और समावेशी विकास मॉडल के साथ सशक्त बना रहे हैं।

लेगाएक्सी, एम3एम फाउंडेशन के सहयोग से, पिकल प्रोज़ की शुरुआत कर रहा है - क्रिकेट के दिग्गज इशांत शर्मा, भुवनेश्वर कुमार और उमेश यादव के नेतृत्व में एक दूरदर्शी पहल, जिसका उद्देश्य भारत को दुनिया के सबसे तेज़ी से बढ़ते खेलों में से एक में अग्रणी स्थान दिलाना है।

लेगाक्सी एक वैश्विक खेल और मनोरंजन कंपनी है, जो अपनी गतिशील कहानी कहने, मनोरंजक अनुभवों और महत्वाकांक्षी सहयोगों के लिए प्रसिद्ध है। खेल को बदलकरउत्कृष्टता को आकर्षक आख्यानों और दूरदर्शी पहलों में ढालते हुए, लेगाक्सी विशिष्ट खेल और जीवनशैली संस्कृति की दुनिया को जोड़ता है।

अरविंद केजरीवाल और सीएम भगवंत मान ने गुजरात में की विशाल जनसभा; बोले- 'आप' मजबूत विपक्ष, भाजपा को चुनाव में हराएगी

अरविंद केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने गुजरात के डेडियापाड़ा में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। केजरीवाल ने भाजपा पर आदिवासी नेता चैतर वसावा को झूठे केस में फंसाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार आदिवासियों का शोषण कर रही है और उनके हक छीन रही है। केजरीवाल ने आगामी तालुका-पंचायत चुनाव में आम लोगों को टिकट देने का एलान किया।

गुजरात/नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और पंजाब के सीएम भगवंत मान ने गुरुवार को गुजरात के डेडियापाड़ा विधानसभा में विशाल जनसभा की। 'आप' विधायक चैतर वसावा की गिरफ्तारी के विरोध में आयोजित जनसभा में उमड़े जन सैलाब को संबोधित करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुजरात में भाजपा का समय चक्र पूरा हो चुका है। अब गुजरात से भाजपा की विदाई तय है। इस बार जनता ने भाजपा को बाय-बाय करने का मन बना लिया है। उन्होंने भाजपा सरकार के दमन और शोषण का मुद्दा उठाते हुए कहा कि आदिवासी नेता चैतर वसावा ने भ्रष्टाचार की पोल खोली तो डरकर भाजपा ने झूठे केस में उनको जेल में डाल दिया। उन्होंने एलान किया कि आगामी तालुका-पंचायत चुनाव में 'आप' आम लोगों को टिकट देगी। अब गुजरात में 'आप' एक मजबूत विपक्ष है, जो इस बार जनता के साथ मिलकर भाजपा को सत्ता से बाहर करेगी।

भाजपा सरकार से पूरा आदिवासी समाज आक्रोशित

'आप' विधायक चैतर वसावा की गिरफ्तारी के विरोध में डेडियापाड़ा में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा सरकार ने आदिवासी समाज का शोषण, दमन और हक छीना है। आज सारा आदिवासी समाज भाजपा से बेहद नाराज है। आदिवासी समाज ने भाजपा और कांग्रेस के नेताओं को वोट दिया, लेकिन कि नेता, मंत्री या पार्टी ने आदिवासी समाज की आवाज नहीं उठाई।

2022 में गुजरात में चुनाव हुए और डेडियापाड़ा से आदिवासी समाज का युवा नेता चैतर वसावा चुनाव में खड़ा हुआ। एक पढ़े-लिखे और समाज की सेवा करने वाले चैतर वसावा को आदिवासी समाज ने भारी मतों के अंतर से चुनाव जीता कर विधानसभा में भेजा। विधायक बनने के बाद से चैतर वसावा लगातार आदिवासी समाज के मुद्दे उठाए हैं।

भाजपा के नेता अपने लिए बना रहे महल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुजरात में सरकारी स्कूलों, अस्पतालों और सड़कों की हालत बेहद खराब है। चैतर वसावा ने स्कूलों, अस्पतालों, सड़कों, बिजली, जल, जंगल और जमीन का मुद्दा उठाया। चैतर वसावा देखा कि सरकार हर साल जो स्कूलों, अस्पतालों, सड़कों के लिए पैसा भेजती है, वह पैसा भाजपा नेताओं की जेब में जाता है।

दुनिया की पहली भारत-वियतनाम सांस्कृतिक धरोहर फिल्म की घोषणा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, : इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने दुनिया की पहली अंतर्राष्ट्रीय फीचर फिल्म वुओन थिन इयु (प्रेम की सुरधारा) की घोषणा की है, जो भारत-वियतनाम सांस्कृतिक धरोहर को समर्पित है।

यह घोषणा 24 जुलाई 2025 को कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में की गई, जिसमें दोनों देशों के प्रमुख गणमान्य व्यक्तित्वों और कलाकारों ने भाग लिया। इनमें प्रोफेसर चू बाओ क्वे, त्रुआंग क्वांग हय सहित कई प्रसिद्ध कलाकार शामिल थे।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की प्रबंध संपादक नीरजा रॉय चौधरी ने फिल्म निर्माण की घोषणा की। इस दौरान दोनों देशों के विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। उपस्थित लोगों में प्रोफेसर चू बाओ क्वे, वियतनाम यूनेस्को संघों के नीति और विकास परामर्श परिषद के अध्यक्ष; त्रुआंग क्वांग हय, वियतनाम के बक निन्ह प्रांत के संस्कृति, खेल व पर्यटन विभाग के निदेशक; डॉ. गुयेन होआंग आन्ह (जूलिया गुयेन), वियतनाम रिकॉर्ड्स संगठन की उपाध्यक्ष और वर्ल्ड रिकॉर्ड्स यूनियन (वर्ल्डकिंग्स) की महासचिव; प्रसिद्ध फिल्म कलाकार संचिता कुलकर्णी, किशोरी शहाणे, विमल मिश्रा, बिस्वदीप रॉय चौधरी और सितारे ज़मीन पर प्रसिद्धि वाले कलाकार - गोपी कृष्णन वर्मा उल्लेखनीय थे।

द गार्जियन ऑफ हेरिटेज नामक पुस्तक से प्रेरित होकर यह फिल्म सातवीं सदी की चाम सभ्यता से जुड़े सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित है, जो भारत और वियतनाम की कला, संगीत और धरोहर के समृद्ध मिश्रण के माध्यम से साझा मूल्यों को पेश करेगी। फिल्म को दोनों देशों में सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर फिल्माया जाएगा। इसका प्री-प्रोडक्शन 19 जून 2025 को हनोई में शुरू हुआ।

यह फिल्म 14 फरवरी 2026 को हिंदी और वियतनामी भाषा में रिलीज़ होगी। इसके बाद इसे दुनिया भर में ओटीटी प्लेटफार्मों पर रिलीज़ किया जाएगा। इसमें इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण और संगीत में उत्कृष्टता के लिए मान्यता प्राप्त रिकॉर्ड होल्डर्स का भी योगदान रहेगा।

फन वे लर्निंग एनजीओ द्वारा कार्यक्रम आयोजित

धान की फसल सूखने पर किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने विद्युत उपकेंद्र पर दिया धरना

परिवहन विशेष न्यूज

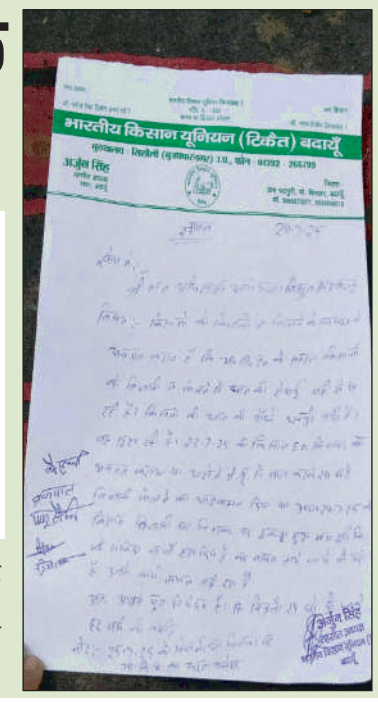

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में किसानों को सिंचाई हेतु विद्युत आपूर्ति न मिलने पर भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने विद्युत उपकेंद्र बिनावर पर धरना देकर अवर अभियंता सतीश चंद्र को ज्ञापन सोपा। इस दौरान भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के तहसील अध्यक्ष बदायूं अर्जुन सिंह ने कहा कि समस्त किसानों को विद्युत आपूर्ति न मिलने से धान की रोपाई नहीं हो पा रही है। किसानों की धान की पौध उखड़ी पड़ी हैं वह सूख रही हैं। इस दौरान किसान यूनियन के कार्यकर्ता पप्पू सैफी ने कहा विद्युत उपकेंद्र बिनावर पर जो संविदा कर्मचारी हटा दिए गए हैं उन्हें पुनः वापस लाया जाए, जो यहां हैं उनसे विद्युत कार्य संभल नहीं रहा है। इस दौरान सभी कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर जेई सतीश चंद्र से 24 घंटे उपलब्ध कराने की मांग की है। इस मौके पर तहसील अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने कहा कि ज्ञापन देने के बावजूद भी अगर बिजली 24 घंटे नहीं मिलती है तो वह 25 जुलाई 2025 को विद्युत केंद्र बिनावर पर धरना देकर प्रदर्शन किया जाएगा।

कानपुर : खाई थी साथ जीने मरने की कसम लेकिन गुनगुन नहीं, केवल लखन मरा

सुनील बाजपेई

कानपुर। दोनों ने एक साथ जीने मरने की कसम खाई थी लेकिन मृत्यु का आलिंगन प्रेमिका ने नहीं केवल प्रेमी ने ही किया। उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह अपनी तलाकशुदा प्रेमिका के साथ काफी समय से लिवइन में रह रहा था। उसने प्रेमिका के साथ रहने के लिए अपने परिवार वालों से भी झगड़ा किया था। यह मामला रावतपुर थाना क्षेत्र का है जिसमें परिवार वालों ने युवक की हत्या करने का भी आरोप लगाया है ,जिसके बाद पुलिस मामले की जांच कर रही है। सूचना पर पुलिस के मौके पर पहुंचने के दौरान युवक के पिता ने आरोप लगाते हुए कहा कि महिला ने पैसों के खातिर बेटे को अपने प्रेम जाल में फंसाया था। घटना काकादेव के ओम चौराहे के पास की है।

जानकारी के मुताबिक इस बीच 4 मिनट 24 सेकेंड का वीडियो सामने आया है। घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक जरौली फेस-2 में रहने वाले स्वीट हाउस संचालक अर्जुन शुक्ला का दूसरे नंबर का बेटा लखन शुक्ला (24) भी साथ में दुकान में बैठता था। लगभग 6 महीने पहले वह हरदेव नगर बर्रा निवासी एक तलाकशुदा गुनगुन नाम की महिला के संपर्क में आ गया था। बताते हैं कि इस तलाकशुदा महिला गुनगुन ने बेटे को रुपयों के लिए प्रेमजाल में फंसा लिया था।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक तलाकशुदा गुनगुन को लेकर लखन का परिवार वालों से भी कई बार विवाद हुआ था। जिसके बाद लगभग दो महीने पहले उसने घर भी छोड़ दिया था। वह गुनगुन के साथ एक किराए पर कमरा लेकर काकादेव ओम चौराहा के पास रहने लगा था। यहीं पर उसका शव फांसी पर लटका हुआ मिला। मामले में उसके परिजनों ने उसकी हत्या किए जाने का भी आरोप लगाया है जिसकी संदर्भ में पुलिस उसकी कथित प्रेमिका गुनगुन को भी हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

प्रेम व वैराग्य की साकार मूर्ति थे स्वामी अखंडानंद सरस्वती महाराज : महन्त स्वामी श्रवणानंद सरस्वती महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

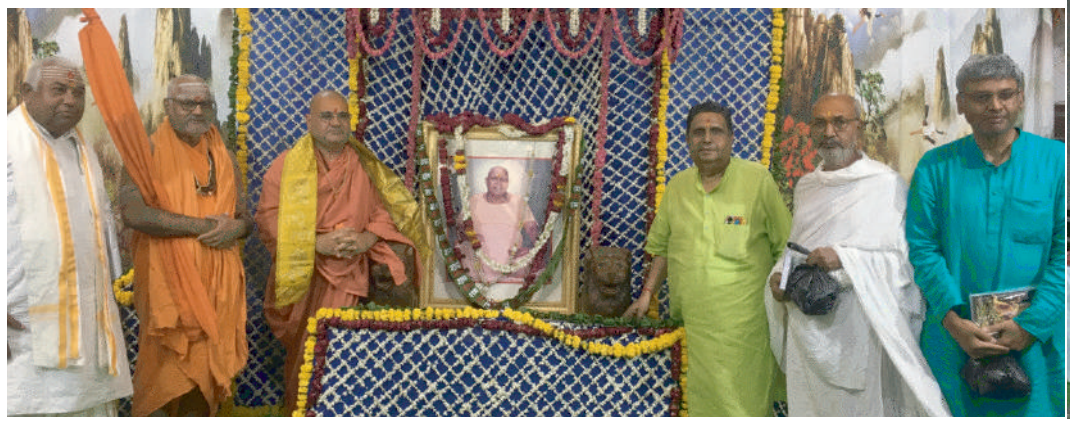

वृन्दावन। मोतीझील स्थित अखंडानंद आश्रम (आनंद वृन्दावन) में आश्रम के संस्थापक स्वामी अखंडानंद सरस्वती महाराज का 114 वां जन्म महोत्सव आनंद जयंती के रूप में अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम पूज्य महाराजश्री की प्रतिमा एवं गुरु चरण पादुकाओं का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया ।तत्पश्चात संत-विद्वत सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ ।जिसकी अध्यक्षता करते हुए श्रीउमा शक्ति पीठाधीश्वर दंडीस्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि मन, बुद्धि व शरीर की शक्ति की सीमा होती है ।सन्त मातृ हृदय होते हैं ।आनंद वृन्दावन आश्रम की परम्परा विश्व प्रतिष्ठित है ।महाराजश्री के द्वारा रचित साहित्य का अवलोकन करने से उनका परिचय प्राप्त होता है ।शरीर की पूजा इसलिए की जाती है, क्योंकि उसमें एक महान आत्मा का प्रवेश होता है।

आश्रम के अध्यक्ष आचार्य महन्त स्वामी श्रवणानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि महाराजश्री प्रेम व वैराग्य की साकार मूर्ति थे ।संन्यास का जीवन दिव्यातिदिव्य है ।महाराजश्री ब्रह्मनिष्ठा के साक्षात प्रतीक हैं ।स्पावन प्रसंगस्र में वर्णित संस्मरणों में महाराजश्री का परिचय प्राप्त होता है ।भौतिक वस्तुओं से सुख की प्राप्ति नहीं होती बल्कि अपने को जान कर ही सुख की प्राप्ति सम्भव है।

डॉ. स्वामी गोविंदानंद सरस्वती महाराज व पण्डित राजाराम मिश्र ने कहा कि महापुरुषों की सदकीर्ति सतत सहज प्रवाहमान होती है ।सद्गुरु हमारे दोषों को दूर कर बुद्धि को निर्मल करते हैं ।ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर महाराजश्री ने न लिखा हो। स्वामी रमेशानंद जी सरस्वती महाराज व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि महाराजश्री साक्षात प्रेम के स्वरूप थे। उनकी दृष्टि में सभी समान थे। भक्ति वेदांत की व्याख्या उन्होंने बड़े ही सहज रूप में की है।

कार्यक्रम में स्वामी शिवस्वरूप महाराज, स्वामी महेशानंद सरस्वती महाराज, स्वामी प्रेमानंद सरस्वती, स्वामी विश्वात्मानंद, रामचेतन महाराज, वासुदेव दास महाराज, हरिदास महाराज, आचार्य अखिलेश शास्त्री, सुरेन्द्र भाई शाह, चिराग भाई शाह, सपना शाह, हेमंत सेठी, उड़िया बाबा आश्रम के प्रबंधक आचार्य कुलदीप दुबे, हरीश अग्रवाल, अखंडानंद आश्रम के प्रबंधक विजय द्विवेदी, आचार्य मनोज शुक्ला, डॉ. राधाकांत शर्मा के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।संचालन संत सेवानंद ब्रह्मचारी महाराज ने किया। महोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ। जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

श्रीराम कथा के प्रकांड विद्वान थे महंत छविराम दास रामायणी महाराज : श्रीमहंत रामदास महाराज

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में किसानों को सिंचाई हेतु विद्युत आपूर्ति न मिलने पर भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने विद्युत उपकेंद्र बिनावर पर धरना देकर अवर अभियंता सतीश चंद्र को ज्ञापन सोपा।

इस दौरान भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के तहसील अध्यक्ष बदायूं अर्जुन सिंह ने कहा कि समस्त किसानों को विद्युत आपूर्ति न मिलने से धान की रोपाई नहीं हो पा रही है। किसानों की धान की पौध उखड़ी पड़ी हैं वह सूख रही हैं। इस दौरान किसान यूनियन के कार्यकर्ता पप्पू सैफी ने कहा विद्युत उपकेंद्र बिनावर पर जो संविदा कर्मचारी हटा दिए गए हैं उन्हें पुनः वापस लाया जाए, जो यहां हैं उनसे विद्युत कार्य संभल नहीं रहा है। इस दौरान सभी कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर जेई सतीश चंद्र से 24 घंटे उपलब्ध कराने की मांग की है। इस मौके पर तहसील अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने कहा कि ज्ञापन देने के बावजूद भी अगर बिजली 24 घंटे नहीं मिलती है तो वह 25 जुलाई 2025 को विद्युत केंद्र बिनावर पर धरना देकर प्रदर्शन किया जाएगा।

बिहार से दिल्ली तक सियासी संग्राम-क्या मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण थ्योरी, हिंदुस्तान में इलेक्शन चोरी ?

संसद में हंगामा-एसआईआर प्रक्रिया मतदाता सूची से अपात्र व्यक्तियों को हटाकर चुनाव में पारदर्शिता बढ़ाना है ,जो सभी राज्यों में होना ज़रूरी

संसद के पिछले कुछ सत्रों से मतदाताओं सहित पूरी दुनियाँ देख रही है, सबसे बड़े लोकतंत्र की गरिमा कैसे तार तार हो रही है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में इन दिनों 21 जुलाई से 21 अगस्त 2025 तक संसद का मानसून सत्र चल रहा है, जो चौथे दिन भी हंगामे में की भेंट चढ़ गया, विशेष गहन पुनरीक्षण पर जोरदार हंगामा चल रहा है, जिसे हिंदुस्तान में इलेक्शन चोरी की संज्ञा दी जा रहा है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि, वर्तमान डिजिटल युग में पूर्ण पारदर्शिता हर क्षेत्र में होना चाहिए ताकि भारत के सभी नागरिकों को उस काम की रिपोर्ट दर्शिका पर कोई संदेह नहीं होना चाहिए, कि कोई हेराफेरी गड़बड़ी या अनुचित प्रक्रिया कर किसी को अनुचित लाभ पहुंचाया जा रहा है। यदि किसी को कोई संदेह है तो सांसद सबसे बड़ा प्लेटफार्म है जहां शांतिपूर्वक बात रखी जा सकती है। आज इस विषय पर हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकिपिछले चार दिनों से संसद के दोनों सदन हंगामा की वजह से बाधित होकर स्थगित हो रहे हैं व काम पूरी तरह से बाधित है। बता दें सांसद की कार्रवाई के प्रति मिनट की कास्ट 2.50 लाख रुपए होती है जो इन चार दिनों में करोड़ों में आंकड़ा होगा, जो कर दाताओं की गाढ़ी कमाई का अपव्यय हो रहा है, दूसरी और पारदर्शिता की बात करें तो विशेष गहन पुनरीक्षण से लाखों जाली मतदाताओं को हटाया जाना कोई बुरा नहीं है ।मेरा मानना है कि यह ऐसा एसआईआर पूरे भारत में पंचायत समिति से लेकर संसद तक हर स्तरपर की जानी चाहिए, ताकि चुनाव में पारदर्शिता व साफ सुथरे की एक संवैधानिक संस्थान की प्रतिष्ठा कायम होगी, क्योंकि ऐसा एसआईआर को लेकर सड़क से संसद तक हंगामा हो रहा है, इसपर जनजागरण करने की आवश्यकता है। चूंकि मतदाता लिस्ट से संवैधानिक रूप से जो पूरी तरह से अपात्र हैं, व लिस्ट में जुड़े हुए हैं तो उनको हटाया जाना ही स्वस्थ लोकतंत्र का असली सम्मान है, जिसे चुनावी विश्वसनीयता भी बढ़ती जाएगी ।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बिहार से दिल्ली तक सियासी संग्राम, क्या मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण रीसेंट थ्योरी, हिंदुस्तान में इलेक्शन की चोरी है।

साथियों बात अगर हम मानसून सत्र 21 जुलाई से 21 अगस्त 2025 चार दिनों से बाधित कामकाज की करें तो, मानसून सत्र के तीसरे दिन भी कोई काम नहीं हो सका है, विपक्ष के भारी हंगामे के बाद सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। सत्र की शुरुआत से ही विपक्ष बिहार में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण और सत्यापन यानी एसआईआर के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाया हुआ है ।एसआईआर के मुद्दे पर पटना से दिल्ली तक सियासी संग्राम है, बिहार में महागठबंधन की अगुवाई कर रहे, आरजेडी के साथ ही विपक्षी इंडिया ब्लॉक की पार्टियां इस मुद्दे पर संसद में चर्चा की मांग कर रही हैं। बिहार विधानसभा में भी काले कपड़े पहनकर विपक्ष प्रदर्शन कर रहा है। एसआईआर के मुद्दे पर संसद के दोनों सदनों के साथ ही बिहार के भी दोनों सदनों में कार्यवाही बाधित हो रही है। विपक्ष चर्चा की मांग कर रहा है जबकि सरकार का रुख है कि इस पर चर्चा नहीं होगी, चुनाव आयोग की तरफ से सरकार जवाब नहीं दे सकती है ।संसद का मानसून सत्र, जैसा कि अपेक्षित था, हंगामेदार रहा, लेकिन बार-बार स्थगित होने की सुर्खियों के पीछे एक वास्तविक लागत छिपी है, संसद के सक्रिय घंटों के दौरान प्रत्येक मिनट के लिए 2.5 लाख रुपये ।वर्तमान सत्र सोमवार

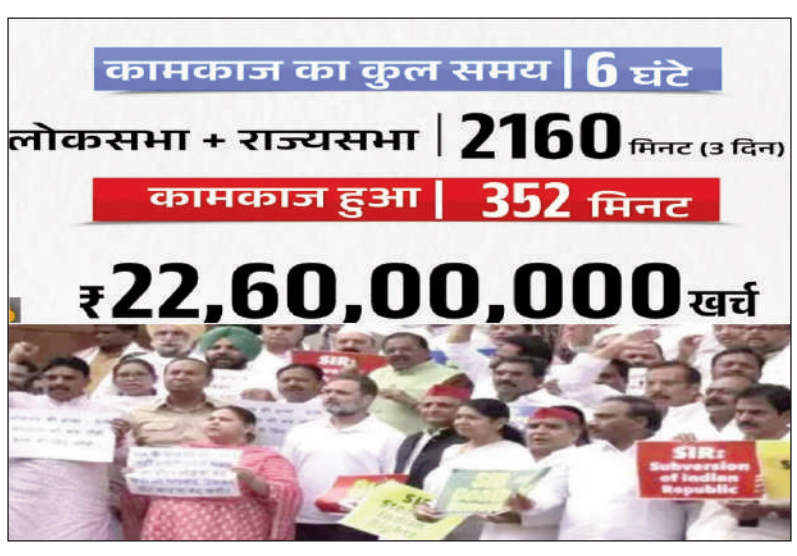

को शुरू हुआ और दो प्रमुख मुद्दे, जिनके कारण दोनों सदनों में गतिरोध उत्पन्न हुआ है, राज्यसभा की अपेक्षा लोकसभा में हंगामा अधिक रहा, बिहार में मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण जिसे विपक्ष ने सत्तारूढ़ गठबंधन को मदद करने का प्रयास बताया है, तथा विपक्षी दलों द्वारा ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा की मांग थी ।संसद के प्रत्येक सदन को प्रतिदिन छह घंटे तक उत्पादक होना चाहिए, भोजनावकाश के एक घंटे को छोड़कर और, 2012 में पूर्व संसदीय कार्य मंत्री के अनुसार, सत्र के दौरान संसद को एक मिनट चलाने पर 2.5 लाख रुपये का खर्च आता है, या लोकसभा और राज्यसभा के लिए1.25 लाख रुपये का खर्च आता है। ये आंकड़े अब एक रूढ़िवादी अनुमान हैं, क्योंकि ये एक दशक से भी अधिक पुराने हैं, लेकिन अद्यतन आंकड़ों के अभाव में, हम आगे की गणना के लिए इन्हीं का उपयोग करेंगे। मानसून सत्र में चार दिन हो चुके हैं, यानें हर सदन को 18 घंटे काम करना चाहिए था ।हालाँकि, गैर- लाभकारी संस्था पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के आंकड़ों के अनुसार, स्थगन के कारण राज्यसभा में 4.4 घंटे और लोकसभा में मात्र 0.9 घंटे या 54 मिनट ही काम हुआ है। इसका अर्थ यह है कि व्यवधानों के कारण करदाताओं को राज्यसभा के लिए 10.2 करोड़ रुपये (816 मिनट का नुकसान, 1.25 लाख रुपये से गुणा) तथा लोकसभा के लिए 12.83 करोड़ रुपये (1,026 मिनट का नुकसान, 1.25 लाख रुपये से गुणा) का नुकसान हुआ है।

साथियों बात अगर हम बिहार विधानसभा से लेकर दिल्ली मानसून सत्रतक संसद में हंगामें के कारणों की करें तो, बिहार में चल रही विशेष मतदाता सत्यापन प्रक्रिया यानी एसआईआई की प्रक्रिया का पहला चरण पूरा होने में अब केवल दो दिन का समय बचा है. शुक्रवार (25 जुलाई, 2025) को भारतीय चुनाव आयोग की मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का पहला चरण समाप्त हो जाएगा औरपुनरीक्षण प्रक्रिया के पहले चरण के तहत 56 लाख मतदाताओं का नाम बिहार मतदाता सूची से कटना तय है ।चुनाव आयोग की ओर से जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक, बिहार के 56 लाख से अधिक मतदाताओं के नाम एक अगस्त को आने वाली ड्राफ्ट मतदाता सूची में नहीं होंगे, बिहार वोटर एसआई आर के तहत सामने आए ताजा आंकड़े-भारतीय चुनाव आयोग की तरफ से बुधवार (23 जुलाई) को जारी किए गए आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, (1) करीब 20 लाख मतदाता मृत पाए गए (2) करीब 28 लाख मतदाता स्थानांतरित हो चुके हैं (3) 7 लाख से ज्यादा मतदाताओं के नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज हैं (4) 1 लाख से ज्यादा ऐसे मतदाता हैं, जिनका पता नहीं चल पाया है

इन आंकड़ों के आधार पर ये कुल संख्या 56 लाख से ज्यादा मतदाताओं की है, हालांकि, भारतीय चुनाव आयोग सत्यापन प्रक्रिया के तहत अब तक बिहार के कुल मतदाता संख्या के 98.01 प्रतिशत का सत्यापन कर चुका है और इनमें से 90.89 प्रतिशत यानी करीब 7.17 करोड़ फॉर्म डिजिटाइज किए जा चुके हैं ।चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, अब आखिरी एक दिन बचा हैं, लेकिन अभी तक करीब दो प्रतिशत यानी करीब 15 लाख मतदाता ऐसे भी हैं, जिन्होंने अभी तक अपना गणना फॉर्म नहीं भरा है, हालांकि, चुनाव आयोग की तरफ नियुक्त बीएलओ राजनीतिक दलों की ओर से नियुक्त बीएलए के साथ मिलकर ऐसी सभी मतदाताओं के बारे में जानकारी जुटाने का काम कर रहे हैं, जिनके बारे में अब तक जानकारी नहीं मिली है. ऐसे में राजनीतिक दलों की ओर से नियुक्त बीएलए की रिपोर्ट के आधार पर चुनाव आयोग ये फैसला करेगा कि किन मतदाताओं के नाम 1 अगस्त को आने वाली ड्राफ्ट मतदाता सूची में शामिल किए जाएंगे।

साथियों बात अगर हम मतदाता सूची से बाहर हुए मतदाताओं को आपत्तियां और दावे करने की करें तो मतदाता सूची से 56 लाख ऐसे मतदाता का नाम बिहार की ड्राफ्ट मतदाता सूची से कटना तय है, ये सूची 1 अगस्त को प्रकाशित होगी और अगले एक महीने का वक्त दिया जाएगा ताकि आपत्तियां और दावे कएि जा सकें, यानी अगर किसी का नाम कट भी जाता है, तो अंतिम सूची में वो शामिल हो सकता है, अगर वो मतदाता होने का दावा साबित कर दे, बिहार में एसआईआर का पहला चरण अगले दो दिनों में पूरा होने वाला है यानी नामांकन फॉर्म को मतदाताओं से प्राप्त करने की आखिरी तारीख 25 जुलाई है, ऐसे में एक बात साफ है की 56 लाख का आंकड़ा हो या 1 लाख का, इसके बढ़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। बिहार विधानसभा में भी काले कपड़े पहनकर विपक्ष प्रदर्शन कर रहा है ।एसआई आर के मुद्दे पर संसद के दोनों सदनों के साथ ही बिहार के भी दोनों सदनों में कार्यवाही बाधित हो रही है. विपक्ष चर्चा की मांग कर रहा है जबकि सरकार का रुख है कि इस पर चर्चा नहीं होगी, चुनाव आयोग की तरफ से सरकार जवाब नहीं दे सकती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बिहार से दिल्ली तक सियासी संग्राम- क्या मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण थ्योरी, हिंदुस्तान में इलेक्शन चोरी ? संसद में हंगामा- एसआईआर प्रक्रिया मतदाता सूची से अपात्र व्यक्तियों को हटाकर चुनाव में पारदर्शिता बढ़ाना है जो सभी राज्यों में होना ज़रूरी, संसद के पिछले कुछ सत्रों में मतदाताओं सहित पूरी दुनियाँ देख रही है, सबसे बड़े लोकतंत्र की गरिमा कैसे तार तार हो रही है।

विदेशी गाड़ियां होंगी सस्ती, जानें इंडियन ऑटो इंडस्ट्री को क्या होगा फायदा?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत और UK के बीच मुक्त व्यापार समझौता (FTA) पर हस्ताक्षर हुआ है जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार में सुधार होगा। इस समझौते से यूके से आयातित कारों पर शुल्क 110% से घटकर 10% हो जाएगा। Land Rover Jaguar Rolls-Royce और Bentley जैसी यूके में बनी कारें सस्ती होगी। रॉयल एनफील्ड और TVS जैसी भारतीय बाइक कंपनियों को भी यूके में निर्यात करने में फायदा होगा।

नई दिल्ली। भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच मुक्त व्यापार समझौता (FTA) पर हस्ताक्षर हुआ है। इसकी पहल पहली घोषणा के लगभग डेढ़ महीने बाद हुआ है। इस FTA को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके ब्रिटिश समकक्ष कीर स्टार्मर की उपस्थिति में औपचारिक रूप दिया गया, जिसमें कॉमर्स मिनिस्टर पीयूष गोयल भी औपचारिक हस्ताक्षर समारोह में उपस्थित थे। दोनों देशों के बीच नया समझौता राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में सुधार लाने के उद्देश्य से है। इसके अलावा, भारत और यूके के लिए कई सामान सस्ते हो जाएंगे, जिससे ऑटोमोटिव उद्योग सहित विभिन्न उद्योगों के उपभोक्ताओं को लाभ होगा। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि इस नए व्यापार समझौता के बाद भारत की ऑटो इंडस्ट्री को क्या फायदा होगा?

नए कार खरीदारों को कैसे लाभ होगा?

मई 2025 में भारत और यूनाइटेड किंगडम के सरकारों ने घोषणा की थी कि मुक्त व्यापार समझौते के हिस्से के रूप में, भारत यूके से आयातित ₹उच्च-स्तरीय कारों₹ पर शुल्क को वर्तमान लगभग 110 प्रतिशत से घटाकर केवल 10 प्रतिशत कर देगा। इस पर अब हस्ताक्षर हो गए हैं। हालांकि, अभी भी यूके में बने मॉडलों की संख्या के लिए एक कोटा निर्धारित किया जाना बाकी है, जिन्हें कम टैरिफ दर पर आयात किया जा सकता है। इसका मतलब यह होगा कि यूके में बनी प्रीमियम और लक्जरी कारों के खरीदारों को अपने आयातित मॉडल के लिए काफी कम कीमत चुकानी पड़ेगी।

किन कार निर्माताओं को FTA से फायदा होगा?

जिन कार निर्माताओं को उनके संबंधित पोर्टफोलियो में मूल्य कटौती से लाभ होगा उनमें Land Rover, Jaguar (दोनों की मालिक Tata Motors), Lotus, Rolls-Royce, Bentley, McLaren, and Aston Martin शामिल हैं, ये सभी यूके में निर्माण करते हैं और चुनिंदा मॉडल भारत में आयात करते हैं। मिनी इंडिया (Mini India), जो यूके से कूपर आयात करती है, ने पहले ही एक मूल्य सुरक्षा कार्यक्रम की घोषणा की थी जिसका उद्देश्य मिनी 3-डोर की कीमत में किसी भी कमी का लाभ देना था।

भारतीय बाइक सेगमेंट को भी मिलेगा लाभ

यह ऐतिहासिक समझौता भारतीय मोटरसाइकिल सेगमेंट के लिए भी बड़े फायदे लेकर आएगा। रॉयल एनफील्ड की पूरी रेंज यूके में बेची जाती है, और अब इस डील के कारण भारत से इसका निर्यात सीधे और अधिक किफायती दरों पर संभव होगा, जिससे यूके में इसकी पहुंच बढ़ेगी। इसके साथ ही, TVS और Bajaj जैसे भारतीय निर्माताओं के कई मॉडल, जैसे कि अपकमिंग aprilia 457, Norton Bikes, Triumph 400 और छोटी KTM बाइक्स, जो भारत में निर्मित होकर यूके को निर्यात की जाती हैं, उनकी कीमतें भी वहां पहले से कम हो सकती हैं।

निसान मैग्नाइट ग्लोबल NCAP क्रैश टेस्ट में हुई पास, 5-स्टार रेटिंग वाली बनी कार

निसान इंडिया ने 4 अक्टूबर 2024 को नई Nissan Magnite लॉन्च की थी। हाल ही में ग्लोबल NCAP क्रैश सेफ्टी रेटिंग्स में इसे 5 स्टार मिले हैं। मैग्नाइट की क्रैश टेस्टिंग कई चरणों में की गई। पहले इसे 4-स्टार रेटिंग मिली थी लेकिन नए मॉडल ने 5-स्टार हासिल किए। टेस्टिंग में 2-स्टार 4-स्टार और 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली।

नई दिल्ली। निसान इंडिया भारत में नई Nissan Magnite को 4 अक्टूबर 2024 को लॉन्च किया था। इसमें कई सारे अपडेट देखने के लिए मिले थे। अब इसका क्रैस सेफ्टी रेटिंग्स के रूप में एक और अपग्रेड आया है, क्योंकि नए मॉडल ने ग्लोबल NCAP क्रैश सेफ्टी रेटिंग्स में 5 स्टार हासिल किए हैं। मैग्नाइट की क्रैश टेस्टिंग कई स्टेप में किया गया है, जो इसमें मिलने वाले सेफ्टी फीचर्स के आधार पर किया गया है। आइए इसके क्रैश टेस्ट के बारे में विस्तार में जानते हैं।

Nissan Magnite ग्लोबल NCAP: पहले और अब

कुछ साल पहले Nissan Magnite का ग्लोबल NCAP के जरिए पुराने क्रैश सेफ्टी टेस्ट किया गया था, तक इसे 4-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिलती थी। अब इसके नए मॉडल की क्रैश टेस्ट किया गया है, जिसमें इसने 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल किया है, जो एक बड़ी सफलता है।

तीन स्टेज में हुआ क्रैश टेस्ट

ग्लोबल NCAP के जरिए Nissan Magnite का क्रैश टेस्ट तीन स्टेज में किया गया है और तीनों की ही रेटिंग जारी की गई है। इसे क्रैश टेस्ट में 2-स्टार, 4-स्टार और 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। यह टाटा नेक्सन के ग्लोबल NCAP द्वारा पहले क्रैश टेस्ट की तरह ही है।

2-स्टार क्रैश सेफ्टी रेटिंग

Nissan Magnite B SUV को क्रैश टेस्ट में केवल 2-सेफ्टी रेटिंग मिली है। इसमें केवल 2 एयरबैग मानक रूप में थे। इसके साथ ही इसमें ESC फीचर्स भी नहीं है। इसे अडल्ट ऑक्यूपेंट टेस्ट में 34 में से 24.49 पॉइंटन और चाइल्ड ऑक्यूपेंट टेस्ट में 49 में से 18.39 पॉइंट हासिल किया है।

4-स्टार क्रैश सेफ्टी रेटिंग

इस स्टेज में निसान मैग्नाइट फेसलिफ्टेड मॉडल का इस्तेमाल किया गया है, जो भारत और अफ्रीका में बेची जाती है। इसमें 6 एयरबैग और ईएसपी मानक रुप में दिया जाता है। साथ ही बेल्ट प्रीटेंशनर, बेल्ट लोड लिमिटर, ISOFIX माउंट्स, सीटबेल्ट रिमाइंडर समेत और भी कई फीचर्स मिलते हैं। इस वेरिएंट ने ग्लोबल NCAP क्रैश टेस्ट में 4-स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल की है। इसने अडल्ट ऑक्यूपेंट टेस्ट में 34 में से 26.51 पॉइंटन और चाइल्ड ऑक्यूपेंट टेस्ट में 49 में से 36 पॉइंट हासिल किया है।

5-स्टार क्रैश सेफ्टी रेटिंग

ग्लोबल NCAP से 4 स्टार क्रैश सेफ्टी रेटिंग हासिल करने के बाद, निसान परिणाम से खुश नहीं थी और कंपनी ने ग्लोबल NCAP को एक बेहतर मॉडल प्रस्तुत किया। यह बेहतर मॉडल ही वह है जिसने निसान मैग्नाइट को वयस्क यात्री परीक्षणों में बहुप्रतीक्षित 5 स्टार रेटिंग दिलाई, क्योंकि इसने 34 में से 32.31 अंक हासिल किए। दिलचस्प बात यह है कि बाल यात्री परीक्षणों में केवल 3 स्टार मिले, क्योंकि इसमें 49 में से 33.64 अंक थे, जिसके परिणामस्वरूप कुल मिलाकर 5 स्टार का स्कोर मिला।

पिआगो आपे ने लॉन्च किए दो इलेक्ट्रिक ऑटो रिक्शा, फुल चार्जिंग में मिलेगी 236Km की ड्राइविंग रेंज

Piaggio व्हीकल्स ने भारतीय बाजार में Ape E-City Ultra और Ape E-City FX Maxx नामक दो नए इलेक्ट्रिक ऑटो लॉन्च किए हैं। E-City Ultra 236 किमी की रेंज और 9 .55 kW पावर प्रदान करता है जबकि FX Maxx 174 किमी की रेंज और 7 .5 kW पावर देता है। इन इलेक्ट्रिक ऑटो में कई आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं। इनकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 3 .30 लाख रुपये है।

नई दिल्ली। Piaggio व्हीकल्स प्राइवेट लिमिटेड ने भारतीय बाजार में एक साथ दो इलेक्ट्रिक ऑटो को लॉन्च किया है। इन्हें लॉन्च करने के साथ ही कंपनी ने अपनी इलेक्ट्रिक तीन-पहिया वाहनों के लाइनअप को बढ़ाया है। कंपनी ने दो नए मॉडल Ape E-City Ultra और Ape E-City FX Maxx को लॉन्च किया है। कंपनी इन दोनों इलेक्ट्रिक ऑटो को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ही लंबी ड्राइविंग रेंज के साथ लेकर आई है। आइए इन दोनों के बारे में विस्तार में जानते हैं।

Piaggio Ape E-City Ultra

यह एकदम नया Ape E-City Ultra इलेक्ट्रिक ऑटो है। इसमें 10.2 kWh की बैटरी दी गई है, जिसके फुल चार्ज होने के बाद 236 किमी तक इसे चलाया जा सकता है। इसमें लगे हुए इलेक्ट्रिक मोटर 9.55 kW की पावर और 40 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 28% की ग्रेडेबिलिटी, क्लाइम्ब असिस्ट मोड और 3 किलोवाट चार्जर के साथ फास्ट-चार्जिंग बैटरी दी गई है। इसमें इंटेलिजेंट टेलीमैटिक्स, लाइव ट्रैकिंग, जियो-फेंसिंग और एक डिजिटल स्पीडोमीटर दिया गया है, जो चार्ज की स्थिति, खाली होने तक की दूरी और सिस्टम अलर्ट जैसी जानकारी मिलती है।

Piaggio Ape E-City FX Maxx

इसे एक बड़ा अपग्रेड दिया गया है। इसमें 8.0 kWh की बैटरी दी गई है, जो फुल चार्ज होने के बाद 174 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देगी। इसमें लगे हुए मोटर 7.5 kW की पावर और 30 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 19% की ग्रेडेबिलिटी दी गई है, जिसे शहर की सवारी को देखकर दिया गया है। इसके साथ ही इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ अपग्रेड किया गया है।

कितनी है कीमत?

भारत में Ape E-City Ultra को 3.88 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। कंपनी इस पर 5 साल/2,25,000 किमी की वारंटी खरीदारों को ऑफर भी कर रही है। Ape E-City FX Maxx को भारत में 3.30 लाख रुपये की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है।

टोयोटा ने बढ़ाई अपनी गाड़ियों की कीमत; इनोवा क्रिसटा, रुमियोन और टायसॉर हुई महंगी

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने जुलाई 2025 में अपनी कुछ गाड़ियों की कीमतों में बढ़ोतरी की है जिसके पीछे बढ़ती इनपुट लागत होने की संभावना है। Toyota Urban Cruiser Taisor की कीमत 2500 रुपये Rumion की 12500 रुपये और Innova Crysta की कीमत में 26000 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। अब इन मॉडलों की शुरुआती कीमत अब 7 .77 लाख रुपये से लेकर 27 .08 लाख रुपये तक है।

नई दिल्ली। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने जुलाई 2025 में अपनी कुछ गाड़ियों की कीमतों में बढ़ोतरी की है। इन गाड़ियों की कीमत के बढ़ोतरी के पीछे की वजह कंपनी की तरफ से नहीं बताई गई है, लेकिन इनकी कीमत बढ़ने के पीछे का कारण बढ़ती इनपुट लागत होने की संभावना है। इन गाड़ियों में Innova Crysta, Rumion, Taisor शामिल है। आइए जानते हैं कि Toyota के किस गाड़ी की कीमत कितनी बढ़ी है।

Maruti Suzuki Fronx का बैज-इंजीनियर वर्जन Urban Cruiser Taisor भारतीय बाजार में टोयोटा की सबसे किफायती क्रॉसओवर SUV है। यह कंपनी की लाइनअप में Glanza से ऊपर और Urban Cruiser Hyryder से नीचे आती है। जुलाई 2025 में टोयोटा ने Taisor की एक्स-शोरूम कीमत में 2,500 रुपये की बढ़ोतरी की है। यह इसके सभी वेरिएंट पर समान बढ़ोतरी की गई है। इसमें पेट्रोल-ओनली और पेट्रोल + सीएनजी इंजन से लैस वेरिएंट E, S, S Plus, G और V शामिल है। इसकी कीमत में बढ़ोतरी के बाद अब Toyota Urban Cruiser Taisor की शुरुआती एक्स-शोरूम 7.77 लाख रुपये हो गई है और टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 13.07 लाख रुपये तक जाती है।

Toyota Rumion

Maruti Suzuki Ertiga का बैज-इंजीनियर वर्जन Rumion भारतीय बाजार में टोयोटा की सबसे किफायती MPV के रूप में काम करती है। इसे टोयोटा की MPV लाइनअप में Innova Crysta और Innova Highcross के नीचे ऑफर किया जाता है। Rumion को S, G और V वेरिएंट में पेट्रोल-ओनली और पेट्रोल + सीएनजी इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसके सभी वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत में 12,500 रुपये की समान बढ़ोतरी की गई है। इस कीमत की बढ़ोतरी के बाद Toyota Rumion की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.66 लाख रुपये हो गई है, जबकि टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 13.95 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

Toyota Innova Crysta

जुलाई 2025 में टोयोटा की Innova Crysta की कीमत में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी की गई है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत में 26,000 रुपये तक बढ़ाया गया है। यह बढ़ोतरी इसके 7-सीटर और 8-सीटर दोनों कॉन्फिगरेशन सहित सभी VS और ZX वेरिएंट में समान किया गया है। दाम में बढ़ोतरी के साथ Innova Crysta की शुरुआती कीमत 19.99 लाख रुपये हो गई है, जबकि टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 27.08 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से परे

विजय गर्ग

"बियॉन्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" की अवधारणा सट्टा भविष्य की प्रौद्योगिकियों और सामाजिक पारियों में तल्लीन हो जाती है जो एक बार एआई के रूप में उभर सकती है, जैसा कि हम वर्तमान में इसे समझते हैं, अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचता है या और भी अधिक उन्नत प्रतिमानों से पार हो जाता है। जबकि एआई स्वयं अभी भी तेजी से विकसित हो रहा है, मल्टीमॉडल एआई और एगेंटिक सिस्टम जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति के साथ, ₹एआई से परे₹ के बारे में चर्चा इस तकनीकी सीमा के सबसे दूर के अंत में क्या है। यहाँ कुछ प्रमुख अवधारणाएँ और अटकलों के क्षेत्र हैं: 1. । सुपरइंटेलिजेंस और टेक्नोलॉजिकल विलक्षणता:

सुपरइंटेलिजेंस: यह एक काल्पनिक बुद्धिमत्ता को संदर्भित करता है जो लगभग सभी संज्ञानात्मक डोमेन में प्रतिभाशाली मानव दिमागों से बहुत बेहतर है। इसे अक्सर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है:

स्पीड सुपरइंटेलिजेंस: एक एआई जो मनुष्यों की तुलना में बहुत तेजी से सोच सकता है।

सामूहिक सुपरइंटेलिजेंस: मानव स्तर के एआई का एक विशाल नेटवर्क एक साथ काम कर रहा है।

गुणवत्ता सुपरइंटेलिजेंस: एक एआई जो समान गति से भी मनुष्यों की तुलना में गुणात्मक रूप से अधिक बुद्धिमान है।

तकनीकी विलक्षणता: यह एक काल्पनिक भविष्य बिंदु है जहां तकनीकी विकास बेकाबू और अपरिवर्तनीय हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मानव सभ्यता में अप्रत्याशित परिवर्तन होते हैं। एक सुपरइंटेलिजेंस को अक्सर इस तरह की विलक्षणता के लिए एक संभावित उत्प्रेरक के रूप में देखा जाता है, क्योंकि यह तेजी से खुद को बेहतर बना सकता है और इससे भी अधिक उन्नत प्रौद्योगिकियों को विकसित कर सकता है, जिससे ₹खुफिया विस्फोट₹ हो सकता है। 2. । पोस्ट-एआई मानव-कंप्यूटर एकीकरण:

ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआई): एआई से परे बस एक उपकरण होने के नाते, भविष्य में कंप्यूटर सिस्टम के साथ मानव दिमाग के अधिक प्रत्यक्ष और निर्बाध एकीकरण शामिल हो सकते हैं। इससे यह हो सकता है:

संवर्धित मानव खुफिया: एआई सिस्टम के सीधे कनेक्शन के माध्यम से मानव संज्ञानात्मक क्षमताओं (स्मृति, प्रसंस्करण गति, सीखने) को बढ़ाना।

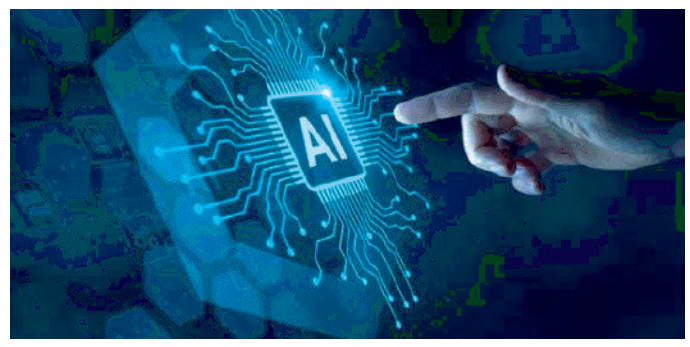

माइंड अपलोडिंग / चेतना संरक्षण: मानव चेतना को डिजिटल या कृत्रिम सब्सट्रेट पर स्थानांतरित करने का अत्यधिक सट्टा विचार, संभावित रूप से डिजिटल अमरता का एक रूप प्राप्त करना।

ट्रांसह्यूमनवाद: एक दार्शनिक और बौद्धिक आंदोलन जो एआई, आनुवंशिक इंजीनियरिंग और जैव प्रौद्योगिकी सहित प्रौद्योगिकी के माध्यम से मानव स्थिति को बढ़ाने की वकालत करता है। ₹एआई से परे₹ अक्सर जैविक सीमाओं को पार करने के ट्रांसह्यूमनिस्ट आदर्शों के साथ संरेखित करता है। 3. । खुफिया और कम्प्यूटिंग के नए प्रतिमान:

क्वांटम-एन्हांस्ड एआई: एआई के साथ क्वांटम कंप्यूटिंग के एकीकरण से पारंपरिक कंप्यूटिंग के साथ वर्तमान में संभव से परे परिमाण के प्रदर्शन लाभ के आदेश हो सकते हैं। यह उन क्षमताओं को अनलॉक कर सकता है जो वर्तमान में अकल्पनीय हैं।

इंटेलिजेंस के नए रूप: एक संभावना है कि ₹एआई से परे₹ में बुद्धि के पूरी तरह से नए रूपों की खोज या निर्माण शामिल हो सकता है जो मानव अनुभूति की नकल नहीं करते हैं। यह जटिल, इंटरकनेक्टेड सिस्टम से विदेशी बुद्धिमत्ता या आकस्मिक गुण हो सकते हैं

सचेत एआई: वर्तमान में दर्शन और विज्ञान कथा के दायरे में, वास्तव में सचेत या संवेदनशील एआई का विकास मानवता के साथ उनके अधिकारों, उद्देश्य और संबंधों के बारे में गहन नैतिक और अस्तित्वगत प्रश्न उठाता है। 4. । सामाजिक और नैतिक निहितार्थ:

एथिकल एआई और संरेखण: जैसा कि एआई अधिक शक्तिशाली हो जाता है, नैतिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है और एआई को मानवीय मूल्यों के साथ संरेखित करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। ₹परे एआई₹ जिम्मेदार नवाचार के लिए मजबूत रूपरेखा की आवश्यकता है।

कार्य और समाज को फिर से परिभाषित करना: एआई की व्यापक गोद लेने और उन्नति, और बाद में ₹एआई से परे₹ प्रौद्योगिकियों, संभवतः नौकरी के बाजार को फिर से आकार देना जारी रखेगा, नए कौशल की आवश्यकता होगी और संभावित रूप से सार्वभौमिक बुनियादी आय या अन्य सामाजिक पुनर्गठन के लिए अग्रणी होगा।

मानव उद्देश्य और अर्थ: एआई के साथ पारंपरिक रूप से मनुष्यों के लिए अद्वितीय माने जाने वाले कई कार्यों को करने में सक्षम, मानव उद्देश्य, रचनात्मकता के बारे में एक गहरी सामाजिक चर्चा होगी, और एआई के बाद की दुनिया में मानव होने का क्या मतलब है। वर्तमान राज्य बनाम ₹एआई से परे₹: वर्तमान एआई प्रगति और सट्टा ₹एआई से परे₹ अवधारणाओं के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। आज, एआई पर केंद्रित है:

मल्टीमॉडल एआई: एआई सिस्टम जो कई तौर-तरीकों (पाठ, चित्र, ऑडियो, वीडियो) से जानकारी को संसाधित और समझ सकते हैं।

एजेंटिक एआई: एआई सिस्टम जो लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजना, कारण और स्वायत्त कार्रवाई कर सकते हैं, अक्सर विभिन्न उपकरणों और वातावरण के साथ बातचीत के माध्यम से।

छोटे, कुशल मॉडल: एआई मॉडल का विकास जो उपभोक्ता उपकरणों पर चल सकता है, लागत को कम कर सकता है और गोपनीयता में सुधार कर सकता है। हालांकि ये महत्वपूर्ण कदम हैं, ₹एआई से परे₹ एक भविष्य की ओर इशारा करता है जहां ये क्षमताएं न केवल उन्नत हैं, बल्कि मौलिक रूप से पूरी तरह से नए तकनीकी प्रतिमानों और बुद्धिमत्ता के रूपों से रूपांतरित या पार हो गई हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

मांसाहारी खाने पर जारी 'सेक्युलर सियासी खेल' के साइड इफेक्ट्स

कमलेश पांडेय

सनातनी हिंदुओं के पवित्र श्रावण यानी सावन के महीने में या आश्विन माह में पड़ने वाले शारदीय नवरात्र के दिनों में पिछले कुछ वर्षों से नॉन-वेज फूड को लेकर जो विवाद सामने आ रहे हैं, वह इस बार भी प्रकट हुए और पक्ष-विपक्ष की क्षुद्र राजनीति के बीच अपनी नीतिगत महत्ता खो बैठे। वहीं, तथाकथित एनडीए शासित राज्य की बिहार विधानसभा के सेंट्रल हॉल में गत सोमवार को खाने में जिस तरह से नॉन-वेज भी परोसा गया, उसे लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तलवारें खिंच गई हैं।

इसी तरह, यूपी में कांवड़ यात्रा मार्ग स्थित ढाबों और भोजनालयों पर दुकान मालिकों की पहचान स्पष्ट करने का मामला भी सुप्रीम कोर्ट में उठा। स्पष्ट है कि यहां भी मूल में भोजन ही है। इसलिए पुनः यह सवाल अप्रासंगिक है कि कोई क्या खाता है, क्या नहीं, यह पूरी तरह व्यक्तिगत मामला है और इस पर ऐसे विवाद से बचा जा सकता था। लेकिन ऐसे सो कॉल्ड सेक्यूलर्स और वेस्टर्न लॉ एडवोकेट्स को पता होना चाहिए कि सदियों से भारतीय समाज एक संवेदनशील व सुसंस्कृत समाज रहा है, जहां स्पष्ट मान्यता है कि खान-पान से व्यक्ति के मन का सीधा सम्बन्ध होता है।

कहा भी गया है कि जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन। इसलिए राजा या शासक का कर्तव्य है कि वह आमलोगों को शुद्ध और सुरुचिपूर्ण भोजन

ग्रहण करने योग्य कानून बनाए और उसकी सतत निगरानी रखे। चूंकि भारतीय समाज में शाकाहारी खानपान को प्रधानता दी गई है ताकि निरोगी जीवन का आनंद लिया जा सके। इसलिए ऐसे लोगों को अभक्ष्य पदार्थों यानी अंडे, मांस-मछली का दुर्गंध नहीं मिले, इसकी भी निगरानी रखना प्रशासन का काम है।

वहीं, खान-पान के व्यवसाय से जुड़ी कम्पनियां शाकाहारी लोगों को मांसाहारी उत्पाद डिलीवर न कर दें, मिलावटी शाकाहारी समान न डिलीवरी कर दें, यह देखना भी प्रशासन का ही धर्म है। यदि वह धर्मनिरपेक्षता की आड़ में अपने नैतिक दायित्वों से मुंह मोडता है तो उसे भारत पर शासन करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। इसलिए देश की भाजपा नीत एनडीए सरकार, या विभिन्न राज्यों की भाजपा सरकारें या एनडीए सरकारें इस बात की कोशिश कर रही हैं कि खास पर्व-त्यौहारों पर निरामिष लोगों के अनुकूल माहौल बनाए रखा जाए।

आमतौर पर यह माना जाता है कि इस्लामिक शासनकाल में और ब्रिटिश शासनकाल में सनातन भूमि पर गुरुकुल, ब्रह्मचर्य व शाकाहार को हतोत्साहित किया गया और मांसाहार तथा मद्यपान को प्रोत्साहित किया गया। जिससे कई सामाजिक कुरूतियों जैसे कोठा संस्कृति वाली वैश्यावृत्ति और अनैतिक अपराध को बढ़ावा मिला। ऐसा इसलिए कि दूषित अन्न खाने व दूषित पेय-पदार्थ पीने से मानवीय मनोवृत्ति विकृत हुई।

इसलिए कहा जा सकता है कि उदार और सहनशील भारतीय समाज का जो नैतिक पतन हुआ है, कभी-कभी स्थिति पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों के काबू से बाहर हो जाती है, उसका सीधा सम्बन्ध असामाजिक तत्वों के खानपान से भी है। इसलिए इस अहम मुद्दे के सभी पहलुओं पर निष्पक्षता पूर्वक विचार होना चाहिए। इस मामले में आधुनिक प्रशासन का ट्रैक रिकार्ड बेहद ही खराब रहा है, अन्यथा जानलेवा मिलावट खोरी इतनी ज्यादा नहीं पाई जाती। मीडिया रिपोर्ट्स भी इसी बात की चुगली करती आई हैं।

जहां तक व्यक्तिगत चुनाव की बात है तो यह अपने घर पर ही लागू हो सकते हैं, सार्वजनिक जगहों पर बिल्कुल नही। इस बात में कोई दो राय नहीं कि खाने-पीने की पसंद किसी

व्यक्ति की पहचान और उसकी संस्कृति का हिस्सा होती है। इसलिए भारत में जैसी विविधता पूर्ण संस्कृति रहती आई है, वैसे ही यहां के खाने में भी विविधता सर्वस्वीकार्य है। इसलिए किसी को क्या खाना चाहिए, इसकी पुलिसिंग होनी चाहिए या नहीं, विवाद का विषय है।

कैरियर की पसंद के रूप में ग्रामीण विकास

विजय गर्ग

भारत जैसे देश में जहां इसकी अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, ग्रामीण जीवन या विकास महत्वपूर्ण है। यह न केवल भारत में है बल्कि अधिकांश विकासशील देशों में बहुसंख्यक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। हमें ग्रामीण विकास के महत्व को जानने की जरूरत है और यह हमारे लिए स्थायी परिवर्तन लाने में कैसे मदद करता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आर्थिक और सामाजिक भलाई में सुधार पर केंद्रित एक व्यापक प्रक्रिया है। यह गांवों और अन्य उप शहरी क्षेत्रों में आजीविका, बुनियादी ढांचे और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों को शामिल करता है।

भारत में ग्रामीण विकास ग्रामीण भारत में रहने वाले लोगों की आर्थिक और सामाजिक भलाई में सुधार पर केंद्रित है, जो देश की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें कृषि विकास, बुनियादी ढांचा निर्माण, सामाजिक बुनियादी ढांचे के विकास और स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार जैसे विभिन्न पहलू शामिल हैं। ग्रामीण विकास भारत की समग्र प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आबादी के एक बड़े हिस्से की जरूरतों को संबोधित करता है और राष्ट्रीय आय और रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह विक्सित भारत के लिए जरूरी है। प्रतीकात्मक और रणनीतिक दोनों ही इशारों में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 6 जुलाई को विश्व ग्रामीण विकास दिवस घोषित किया, जो 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। यह घोषणा, अंतरराष्ट्रीय एकजुटता की भावना में डूबी, ग्रामीण गरीबी की गहरी जड़ें चुनौती और इसे आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक पूर्व शर्त के रूप में संबोधित करने की आवश्यकता को स्वीकार करती है। वैश्विक घोषणाओं और संकल्पों के एक वंश से आकर्षित करना - मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा से लेकर अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा तक - संकल्प उन लोगों के जीवन और संघर्षों पर निरंतर प्रकाश डालना चाहता है जो मिट्टी तक, समुद्र की कटाई करते हैं, और पोषण करते हैं दुनिया के ग्रामीण कोनों में भूमि।

विश्व ग्रामीण विकास दिवस का अवलोकन, जैसा कि उल्लिखित है, केवल औपचारिक इशारे के रूप में नहीं है, बल्कि सार्थक कार्रवाई के लिए उत्प्रेरक के रूप में है। सरकारों, नागरिक समाज, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों को ठोस गतिविधियों, नीतिगत बातचीत और जमीनी पहल के माध्यम से वार्षिक स्मरणोत्सव में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। स्वैच्छिक योगदान और स्थानीय रूप से संचालित रणनीतियों पर स्पष्ट जोर देने के साथ, संकल्प इस दिन को ग्रामीण आवाजों को ऊंचा करने, विकास के प्रयासों को गैल्वनाइज करने और दुनिया के सामूहिक वादे को नवीनीकृत करने की शक्ति के साथ सौंपता है: किसी को पीछे नहीं छोड़ना, यहां तक कि सबसे दूरस्थ और भूल गए स्थानों में भी नहीं पृथ्वी। ग्रामीण विकास उन लोगों के लिए एक कैरियर विकल्प हो सकता है जो अपने आसपास सामाजिक परिवर्तन लाने का सपना देखते हैं। उन उम्मीदवारों के लिए विकल्प और अवसर हैं जो प्रतिबद्ध हैं और योग्य भी हैं। ग्रामीण विकास से संबंधित कई पाठ्यक्रम हैं। ग्रामीण विकास पेशेवर विकासशील योजनाओं और गतिविधियों की योजना बनाकर और निगरानी करके और सरकारों या अन्य विकास एजेंसियों के विभिन्न लक्ष्यों को बढ़ाकर गांवों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह करियर उन लोगों के लिए आदर्श है जो आर्थिक, पर्यावरण और सामाजिक परिवर्तनों का समर्थन करना चाहते हैं। किसी को सरकार में और गैर सरकारी संगठनों या अन्य विकासात्मक एजेंसियों में भी नौकरी मिल सकती है। अधिकांश विश्वविद्यालय और कॉलेज ग्रामीण विकास से संबंधित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय पंचायती राज और ग्रामीण विकास संस्थान पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा जैसे विभिन्न पाठ्यक्रम प्रदान करता है। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ग्रामीण विकास से संबंधित विशेष पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न प्रबंधन पाठ्यक्रम हैं जो बी स्कूलों द्वारा भी पेश किए जाते हैं। इग्नू के पाठ्यक्रमों सहित ओपन और डिस्टेंस लर्निंग कोर्स भी उपलब्ध हैं। शैक्षणिक योग्यता के अलावा ग्रामीण विकास के माध्यम से सफल होने के लिए रोजगार कौशल होना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएच. मलोट

आकंठ तक भ्रष्टाचार में डूबी कांग्रेस किस-किस की पैरवी करेगी

योगेंद्र योगी

अपने जीजाजी की पैरवी करने से पहले राहुल गांधी शायद यह भूल गए कि सोनिया गांधी और खुद उन पर भी भ्रष्टाचार के गंभीर मामले चल रहे हैं। नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी ने सोनिया गांधी, राहुल गांधी और अन्य के खिलाफ आरोप पत्र दायर कर चुकी है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग मामले में शुरुआती चार्जशीट दायर करने पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सरकार पर वाड्रा को जानबूझ कर परेशान करने का आरोप लगाया। भ्रष्टाचार के मामलों में कांग्रेस की हालत इतनी दयनीय हो चुकी है कि राहुल के इस आरोप के चंद दिनों बाद ही ईडी ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के पुत्र चैतन्य बघेल को कथित शराब घोटाले में गिरफ्तार कर लिया। ईडी ने भूपेश बघेल के आवास सहित कई स्थानों पर छापेमारी की और महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किए। यह घोटाला 2019-2022 के दौरान लगभग 2161 करोड़ रुपए की अवैध वसूली से जुड़ा है। सवाल यह है कि राहुल, सोनिया और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े आखिरकार किस-किस कांग्रेस के नेता के भ्रष्टाचार के लिए केंद्र सरकार और जांच एजेंसियों को दुर्भावना की कार्रवाई के लिए जिम्मेदार ठहराएंगे।

ईडी ने रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग मामले में शुरुआती चार्जशीट दायर की। इस मामले में ईडी की तरफ से 11 लोगों को आरोपी बनाया गया है। इस मामले पर लोकसभा नेता विपक्ष राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि मेरे जीजाजी को पिछले 10 सालों से इस सरकार की तरफ से परेशान किया जा रहा है। यह आरोपपत्र है, उसी षडयंत्र का ही एक और हिस्सा हैं। रॉबर्ड वाड्रा के खिलाफ ये चार्जशीट शिखोपुर लैंड डील मामले में पेश की गई है। ईडी के मुताबिक वाड्रा ने यहां 3.53 एकड़ महज 7.5 करोड़ रुपये में खरीदी थी, जिसे कुछ ही समय बाद वाड्रा ने 58 करोड़ रुपये में बेच दिया था।

अपने जीजाजी की पैरवी करने से पहले राहुल गांधी शायद यह भूल गए कि सोनिया गांधी और खुद उन पर भी भ्रष्टाचार के गंभीर मामले चल रहे हैं। नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी ने सोनिया गांधी, राहुल गांधी और अन्य के खिलाफ आरोप पत्र दायर कर चुकी है। नेशनल हेराल्ड मामला कांग्रेस के शासनकाल में शुरू हुआ था। ईडी की चार्जशीट में सोनिया गांधी आरोपी नंबर 1 और राहुल गांधी आरोपी नंबर 2 हैं। आरोप पत्र में कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा और सुमन दुबे को भी मामले में आरोपी बनाया गया है। राहुल गांधी को वाड्रा के मामले में साजिश नजर आती है। लेकिन दूसरे घोटालों के मामलों में कांग्रेस भ्रष्टाचार के मामलों में की चुप्पी साबित करती है कि कांग्रेस अपने अतीत को दोहरा रही है।

केंद्र में कांग्रेस की सरकार नहीं हैं, लेकिन जिन गिने-चुने राज्यों में कांग्रेस की सरकार है, वहां से भ्रष्टाचार की सूचनाएं आती रहती हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने कोलार-चिक्काबल्लापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (कोमूल) की 2023 भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं के संबंध में कर्नाटक कांग्रेस विधायक केवाई नानजेगौड़ा की 1.32 करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क की है। कोलार जिले के मालूर निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले नानजेगौड़ा, कोमुल के अध्यक्ष भी हैं। ईडी के अनुसार कोमुल द्वारा आयोजित भर्ती प्रक्रिया में एक लिखित परीक्षा और एक साक्षात्कार शामिल था, लेकिन पैसे और राजनीतिक सिफारिशों के बदले में इसमें हेरफेर किया गया था। संघीय एजेंसी ने आरोप लगाया कि नांजेगौड़ा की अध्यक्षता वाली भर्ती समिति ने कोमूल के प्रबंध निदेशक के.एन. गोपाल मूर्ति के साथ मिलकर अन्य निदेशकों के साथ मिलकर कुछ कम योग्य उम्मीदवारों को लाभ पहुंचाया,

जबकि योग्य उम्मीदवारों को वंचित रखा।

कांग्रेस की हालत यह हो गई कि वर्तमान अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े और पूर्व अध्यक्ष तक भ्रष्टाचार के आरोपों के घेरे में रहे हैं। कर्नाटक में खडग़े के बेटे राहुल खडग़े के नेतृत्व वाले सिद्धार्थ विहार ट्रस्ट को आवंटिक एक जमीन में हेरफेर का आरोप लगाया गया था। कर्नाटक में यदि भाजपा की सरकार होती तो खडग़े के खिलाफ भी भ्रष्टाचार का मामला दर्ज हो जाता। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने संदिग्ध परिस्थितियों में खडग़े के परिवार द्वारा संचालित सिद्धार्थ विहार ट्रस्ट को 5 एकड़ जमीन आवंटित थी। दिलचस्प बात यह है कि 5 एकड़ जमीन (खडग़े परिवार द्वारा चलाए जा रहे ट्रस्ट को) इलाके में अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं के लिए नियम तैयार करने के कुछ दिनों भीतर दी गई थी। इस मामले का खुलासा होने के बाद खडग़े बैकफुट पर आ गए थे। खडग़े परिवार के स्वामित्व वाले सिद्धार्थ विहार ट्रस्ट ने विवादास्पद स्थल को वापस करके भ्रष्टाचार से मुक्त होने का प्रयास किया।

कांग्रेस जिन भी राज्यों में सत्ता में रही है, उनमें से ऐसा एक भी राज्य नहीं जिनमें मुख्यमंत्री और मंत्रियों पर भ्रष्टाचार-घोटालों के आरोप नहीं लगे हों। भ्रष्टाचार के मामलों को देखें तो दिल्ली से लेकर हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और गुजरात से लेकर महाराष्ट्र तक के बड़े कांग्रेस नेता सीबीआई, इनकम टैक्स और ईडी जैसी एजेंसियों के निशाने पर रहे हैं। हालांकि कांग्रेस अपने नेताओं पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से इनकार करती है। पार्टी का कहना है कि बीजेपी की मोदी सरकार राजनीतिक बदले की भावना से कार्रवाई कर रही है।

सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि कांग्रेस में गांधी परिवार खडग़े सहित अन्य नेता भाजपा पर दुर्भावना से कार्रवाई का आरोप लगाते रहे हैं, किन्तु अदालतों में चल रहे इनके खिलाफ मामलों में यह दुर्भावना अभी तक साबित नहीं कर सके। चर्चित घोटालों और घपलों में अदालतों से किसी को क्लीन चिट नहीं मिल सकी। सवाल यह भी है कि आखिर कांग्रेस का दामन इतना ही पाक साफ है तो ईडी और अन्य एजेंसियों के आरोपों को अदालतों से मुक्ति क्यों नहीं मिल सकी। कांग्रेस सहित 14 राजनीतिक दलों को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिली। ईडी और सीबीआई के दुरुपयोग की याचिका पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार कर दिया था।

शीर्ष कोर्ट ने कहा था कि नेताओं को विशेष इम्यूनिटी नहीं दी जा सकती। नेताओं के भी आम नागरिकों जैसे अधिकार हैं। अगर सामान्य गाइडलाइन जारी की तो ये खतरनाक प्रस्ताव होगा। नेताओं की गिरफ्तारी पर अलग से गाइडलाइन नहीं हो सकती। इस टिप्पणी के बाद यह याचिका वापस ले ली गई। निरन्तर भ्रष्टाचार के आरोपों को झेल रही कांग्रेस और विपक्षी दलों को यह बात शायद अभी तक समझ नहीं आई कि जब तक भ्रष्टाचार पर जीरा टॉलरेंस की नीति नहीं अपनाएंगे, तब तक देश के मतदाताओं से खोया हुआ विश्वास फिर से हासिल नहीं कर पाएंगे।

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

टाटानगर स्टेशन पार्किंग में दबंगों को डीएसपी भोला प्रसाद की टीम ने खदेड़ खदेड़ कर पीटा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, कुछ वर्षों से टाटानगर रेलवे स्टेशन परिसर में पार्किंग एरिया गुंडा राज बन जाने से आम नागरिकों, रेल यात्रा में आये लोगों को विगत कुछ समय से दिक्कत हो रही थी.

अब पुनः शुल्क वसूली के नाम पर गुंडागर्दी एक बार फिर से सतह पर आ गई है. खुद को समाजसेवी बताने वाले ठेकेदार के कर्मचारी बताकर आधा दर्जन से अधिक युवक बिना ड्रेस के रायफल लेकर रेलवे क्षेत्र में घूमते देखे गए. आउट गेट पर जबरन कब्जा जमा चुके इन कर्मियों की मनमानी पर न तो स्टेशन डायरेक्टर कुछ बोल रहे हैं और न ही आरपीएफ हरकत में आ रही है.

शनिवार देर रात जब शहर के उनसे अधिक दबंग डीएसपी भोला प्रसाद स्टेशन पहुंचे तो उनके साथ भी पार्किंग कर्मियों की बदसलूकी हो गई.

ड्रॉपिंग जोन में स्कॉर्पियो लेकर पहुंचे डीएसपी को 'पहले पर्ची कटाइए' कहकर रोक दिया गया. परिचय देने के बावजूद बदतमीजी जारी रही. बात बढ़ने पर डीएसपी ने स्कॉर्पियो बीच पार्किंग में खड़ी कर दी और स्थानीय पुलिस को बुला लिया.इसके बाद जो हुआ, वह पार्किंग ठेकेदार की दबंगई से त्रस्त लोगों के लिए राहत बन गया. पुलिसकर्मियों ने पार्किंग में मौजूद कर्मियों की खदेड़-खदेड़ कर पिटाई कर दी. चार से पांच कर्मचारियों को दौड़ा-दौड़ा कर मारा गया. आधे घंटे तक चली कार्रवाई में ठेकेदार के गुर्गे भागते नजर आए. घटना के बाद रेल पुलिस मौके पर पहुंची और सभी कर्मचारियों की पहचान के लिए आधार व फोटो मंगवाया गया. साथ ही पार्किंग मैनेजर से पूरी सूची मांगी गई है.

धनबाद में कोयला का अवैध खदान धंसने से 9 दबे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची , धनबाद के बाघमारा थाना क्षेत्र स्थित बीसीसीएल की बंद खदान के पास अवैध कोयला खनन के दौरान बड़ा हादसा हुआ. विगत रात चाल धंसने से 9 मजदूर मलबे में दब गए. एनडीआरएफ और बीसीसीएल की टीम राहत और बचाव कार्य में जुटी है. जमुनिया नदी का पानी भी खदान में घुसने से रेस्क्यू ऑपरेशन में भारी बाधा उत्पन्न हो रही है. मामले की लीपापोती जारी है .

झारखंड के धनबाद में जमुनिया के पास मंगलवार रात एक दर्दनाक हादसा हो गया. बीसीसीएल (Bharat Coking Coal Limited) की बंद पड़ी सी-पैच खदान के पास अवैध रूप से कोयले का उत्खनन किया जा रहा था, उसी दौरान चाल (खदान का एक हिस्सा) धंसने से कम से कम नौ मजदूर मलबे में दब गए.

मौके पर राहत कार्य के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल यानी की एन डी आर एफ की 33 सदस्यीय टीम पहुंच चुकी है, जिसका नेतृत्व संतोष पठानिया कर रहे हैं. साथ ही

बीसीसीएल की माइंस रेस्क्यू टीम भी संयुक्त ऑपरेशन में जुटी

बलिदानियों ने दिखाई है राह, उन्हें आजादी से उड़ने की।(कारगिल विजय दिवस विशेष आलेख 26 जुलाई)'

जगदंबा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' ने क्या खूब कहा है-'शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,वतन पर मरनेवालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।' भारतीय इतिहास में 26 जुलाई का दिन अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए क्यों कि यह वह दिन है, जब हम प्रत्येक वर्ष 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाते हैं। वास्तव में यह हमारे देश की राष्ट्रीय एकता, संकल्प, शौर्य और बलिदान की मिसाल है। यह हमारे देश के उन वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देने का भी अवसर है, जिन्होंने देश सेवा करते हुए अपने प्राणों की आहूति दे दी थी। यदि हम यहां पर इस दिवस के मनाये जाने की बात करें तो पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 1999 में युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए भारतीय सैनिकों की स्मृति में उनका सम्मान करने के लिये इस दिवस को यानी कि 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। गौरतलब है कि साल 2000 में द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक की स्थापना भारतीय सेना द्वारा वर्ष 1999 में ऑपरेशन विजय की सफलता की याद में बनाया गया था तथा बाद में वर्ष 2014 में इसका जीर्णोद्धार किया गया। जम्मू और कश्मीर के कारगिल ज़िले के द्रास शहर में स्थित होने के कारण इसे 'द्रास युद्ध स्मारक' के रूप में भी जाना जाता है। बाद में, विभिन्न संघर्षों व मिशनों में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सैनिकों को समर्पित 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' का उद्घाटन साल 2019 में किया गया। बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि 3 मई 1999 को भारत-पाकिस्तान के बीच यह युद्ध तब शुरू हुआ, जब भारत को पता चला कि पाकिस्तान समर्थित घुसपैठियों और सैनिकों ने कारगिल के हाई अल्टीट्यूड (16,000 से 18,000 फीट की ऊंचाई पर) इलाकों पर कब्जा कर लिया है, ये जगहें भारतीय क्षेत्र में थीं और सामरिक दृष्टि से हमारे देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण व अहम थीं।वास्तव में, वर्ष 1999 का कारगिल युद्ध परमाणु संपन्न दक्षिण एशिया में पहला सैन्य संघर्ष/युद्ध था, जो दो परमाणु संपन्न देशों(भारत-पाकिस्तान) के बीच पहला वास्तविक युद्ध था। दरअसल, 1971 में बांग्लादेश के गठन के बाद, भारत-पाकिस्तान ने निकटवर्ती पर्वत श्रृंखलाओं पर सैन्य चौकियों के माध्यम से सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण की होड़ में निरंतर तनाव का सामना किया। इसके बाद 1998 में दोनों ही देशों द्वारा परमाणु परीक्षण किए जाने के बाद दोनों देशों के बीच तनाव फिर से बढ़ गया। इसके बाद फरवरी 1999 में लाहौर घोषणा हुई। वास्तव में इसका उद्देश्य कश्मीर संघर्ष को शांतिपूर्ण और द्विपक्षीय रूप से हल करना था, लेकिन वर्ष 1998-1999 में ठंड के मौसम के दौरान पाकिस्तानी सशस्त्र बलों ने कारगिल, लद्दाख के द्रास व बटालिक सेक्टर में एन एच 1ए पर स्थित किलेबंद ठिकानों पर कब्ज़ा करने के लिये नियंत्रण रेखा (एल ओ सी) के पार गुप्त रूप से सैनिकों को प्रशिक्षित और तैनात किया। भारत ने पाकिस्तान के इन घुसपैठियों को आतंकी और जिहादी समझा, लेकिन वास्तव में पाकिस्तान का यह हमला उसका एक बहुत ही सुनियोजित सैन्य अभियान था। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि यह युद्ध वर्ष 1999 की गर्मियों में कारगिल सेक्टर में मश्कोह घाटी से लेकर तुरतुक तक फैली 170 किलोमीटर लंबी पर्वतीय सीमा पर लड़ा गया था और इसके प्रत्युत्तर में, भारत ने ऑपरेशन विजय की शुरुआत की, जिसमें घुसपैठ का मुकाबला करने के लिये 200,000 से अधिक सैनिकों को तैनात किया गया था। पाकिस्तान ने इस ऑपरेशन(कारगिल युद्ध के दौरान) को 'ऑपरेशन बद्र' नाम दिया था, जिसका उद्देश्य कारगिल सेक्टर पर कब्जा करके श्रीनगर-लेह राजमार्ग को बाधित करना और भारतीय सेना को सियाचिन ग्लेशियर से अलग करना था, लेकिन पाकिस्तान की यह साजिश ज्यादा दिन नहीं टिक सकी और भारतीय सेना ने पाकिस्तान को नाकों चने

चबवा दिए।भारतीय सेना ने पाकिस्तान की इस घुसपैठ का मुकाबला करने के लिए 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया और 60 दिनों तक भारत पाकिस्तान के बीच चले इस युद्ध में 26 जुलाई 1999 को भारत ने पाकिस्तान द्वारा सभी कब्जे वाले इलाकों को घुसपैठ से आजाद करा लिया। गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना का 'ऑपरेशन सफेद सागर' तथा भारतीय नौसेना का 'ऑपरेशन तलवार' भी कारगिल युद्ध से जुड़े महत्वपूर्ण ऑपरेशन थे। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि कारगिल की दुर्गम पहाड़ियों पर हुए उस युद्ध में हमारे 527 जवानों ने प्राणाहुति दी थी।

इस युद्ध में भारतीय सेना के वीरों ने ऑक्सीजन की कमी, बर्फीली हवाएं और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में पाकिस्तान के साथ लड़ते हुए अदम्य साहस, वीरता, शौर्य और दृढ़ता का परिचय दिया, इनमें लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडेय (परमवीर चक्र, मरणोपरांत), कैप्टन विक्रम बत्रा (परमवीर चक्र, मरणोपरांत),ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव (परमवीर चक्र) तथा राइफलमैन संजय कुमार(परमवीर चक्र) शामिल हैं।इन वीरों में सूबेदार मेजर (मानद कैप्टन) योगेंद्र सिंह यादव सबसे कम उम्र (19 साल) में परमवीर चक्र से सम्मानित अदम्य साहस, शौर्य और वीरता की मिसाल हैं। बहरहाल, बहुत कम लोग ही यह बात जानते होंगे कि कारगिल युद्ध के बाद ही हमारे देश में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) का गठन सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच 'संयुक्तता' को बढ़ावा देने के लिये किया गया था। उल्लेखनीय है कि सीडीएस सरकार के एकल-बिंदु सैन्य सलाहकार के रूप में कार्य करता है और तीनों सेवाओं के एकीकरण की देखरेख करता है। इतना ही नहीं, कारगिल युद्ध के बाद सुरक्षा क्षेत्र में सुधार, त्रि-सेवा कमानों की स्थापना,तकनीकी खुफिया क्षमताओं को बढ़ाने के लिये राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (एनटीआरओ) की स्थापना,सीमा प्रबंधन एवं परिचालन सुधार, सेनाओं के बीच संयुक्त अभ्यासों, आतंकवाद विरोधी उपायों, स्वदेशी सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम की आवश्यकता तथा विभिन्न सैद्धांतिक परिवर्तनों जैसे सुधारों को बल मिला।कहना ग़लत नहीं होगा कि इस युद्ध ने हमारे देश की सैन्य रणनीतियों और राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।सच तो यह है कि युद्ध ने देश में मज़बूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता को उजागर किया और राष्ट्रीय सुरक्षा बुनियादी ढाँचे में बड़े सुधारों को प्रेरित किया। इसने नियंत्रण रेखा (एल ओ सी) को एक प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में फिर से स्थापित किया और 'कोल्ड स्टार्ट सिद्धांत' जैसे नए सैन्य सिद्धांतों के विकास को गति दी। अंत में अज्ञात के शब्दों में यही कहूंगा कि-'सैकड़ों परिंदे आसमान पर आज नजर आने लगे, बलिदानियों ने दिखाई है राह, उन्हें आजादी से उड़ने की।'

सुनील कुमार महला,
टिप्पणीकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

कर्नाटक का 'रोहित वेमुला विधेयक 2025' हिन्दुओं को बाँटने की साजिश तो नहीं!

रामस्वरूप रावतसरे

कर्नाटक में सिद्दारमैया सरकार आगामी मानसून सत्र में 'रोहित वेमुला विधेयक 2025' को पेश करने की पूरी तैयारी कर चुकी है। राहुल गाँधी के 'हुक्म' के बाद कर्नाटक सरकार ने छात्रों के बीच एससी,एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदाय को 'अन्याय से बचाने' का बीड़ा उठाया है। रोहित वेमुला विधेयक का उद्देश्य कथित तौर पर उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और अल्पसंख्यक समुदायों के छात्रों के साथ होने वाले जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न को रोकना बताया जा रहा है।

इस विधेयक का नाम हैदराबाद विश्वविद्यालय के पीएचडी छात्र रोहित वेमुला के नाम पर रखा गया है। 17 जनवरी 2016 को रोहित ने आत्महत्या कर ली थी। उसकी आत्महत्या के बाद पूरे देश में जातिगत भेदभाव को लेकर काफी आक्रोश सामने देखने को मिला था हालाँकि बाद में यह बात जरूर साफ हुई कि रोहित वेमुला असल में दलित समुदाय से था ही नहीं।

कर्नाटक सरकार ने इस विधेयक को राज्य के सभी सरकारी, निजी और डीम्ड विश्वविद्यालयों में लागू करने की बात कही है। इसके तहत सामान्य कैटेगरी के छात्रों को छोड़कर बाकी सभी के लिए, यानी एससी,एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदाय को अन्याय से बचाने की बात कह कानून बनाए गए हैं। बिल में किसी भी तरह के भेदभाव को गैर-जमानती और संगीन अपराध माना गया है। इसमें पहली बार दोषी पाए जाने पर 1 साल की जेल और 10,000 जुर्माना और दोबारा अपराध पर 3 साल की जेल और 1 लाख जुर्माना का प्रावधान है। साथ ही, दोषी संस्थानों को राज्य सरकार से वित्तीय सहायता नहीं मिलेगी और पीड़ति को सीधे मुआवजा देने की व्यवस्था भी की गई है। बिल के तहत कोई भी पीड़ति या फिर उसके परिवार का व्यक्ति सीधे पुलिस में शिकायत दर्ज कर सकता है और बिना किसी सबूत के आरोप लगाया जा सकता है। दोषी पाए जाने पर आरोपित को 1 लाख रुपए तक का मुआवजा देना पड़ेगा।

जानकारों की माने तो इस कानून से एक तरह से सामान्य श्रेणी के छात्रों को रंजिश में एससी,एसटी, ओबीसी या अल्पसंख्यक समुदाय का कोई भी व्यक्ति बड़े आराम से जेल भिजवा सकता है। जब तक व्यक्ति निर्दोष साबित नहीं हो जाता तब तक वो दोषी ही माना जाएगा। इससे भी बड़ी विडंबना ये है कि आरोपित के साथ-साथ उस व्यक्ति को भी इस एक्ट के तहत जेल हो सकती है जिसने आरोपित की मदद की हो, उकसाया हो या फिर वो भी जिसने रोकने की कोशिश नहीं की।

सोशल मीडिया पर जानकार इसे एक संस्थागत उत्पीड़न बताया है। उनका कहना है कि इसे 'सामाजिक न्याय' की चाशनी में लपेटकर परोसा जा रहा है। कई विश्लेषक ये भी कह रहे हैं कि जब इसी तरह का एससी,एसटी एक्ट इस वर्ग को संरक्षण देने के लिए पहले से ही मौजूद है तो फिर इस तरह का एक्ट थोप कर संस्थानों के माहौल में द्वेष भरने की क्या आवश्यकता है?

कर्नाटक सरकार ने रोहित वेमुला के नाम पर दलित विधेयक बना दिया जबकि रोहित असल में दलित था ही नहीं। अब इस पर लोग सवाल भी उठा रहे हैं। 2017 में आंध्र प्रदेश सरकार ने रोहित का अनुसूचित जाति प्रमाण पत्र रद्द कर दिया था और कहा था कि वह ओबीसी वर्ग से हैं. ऐसे में शेड्यूल कास्ट का प्रमाण पत्र धोखाधड़ी से बनवाया गया। इसके लिए तेलंगाना पुलिस ने भी 3 मई 2024 को हाई कोर्ट में एक क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की थी। इसमें बताया गया था कि रोहित वेमुला एससी श्रेणी से नहीं था और उसने आत्महत्या इसलिए की क्योंकि उसे अपनी जाति की सच्चाई के उजागर होने का डर था। क्लोजर रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई थी कि उनकी मृत्यु के लिए कोई भी व्यक्ति या संस्थान जिम्मेदार नहीं था। रोहित वेमुला के माता-पिता ने भी इस बात को स्पष्ट किया है कि वह एससी,एसटी, समुदाय से नहीं बल्कि वेद्देरा जाति से आते हैं। रोहित के पिता ने यह तक भी कहा था कि उनके बेटे की हत्या हुई थी और वामपंथी समूह ने रोहित की मौत का इस्तेमाल मोदी सरकार के खिलाफ माहौल बनाने के लिए किया।

जानकारों की माने तो रोहित की मौत के बाद शुरुआत में उसे दलित बताया गया। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने वामपंथी मीडिया और प्रोपेगेंडा पोर्टल्स के साथ मिलकर जातिगत भेदभाव का मुद्दा उठाया और मोदी सरकार पर निचली जातियों को दबाने का आरोप लगाया। नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी ने 16 अप्रैल 2025 को कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को पत्र लिखा और कहा कि कॉलेज और विश्वविद्यालयों में 'रोहित वेमुला अधिनियम' लेकर आया जाए ताकि जातिगत भेदभाव समाप्त हो सके। यह माँग तब आई जब उन्होंने संसद में दलित, आदिवासी और ओबीसी समुदाय के छात्रों और शिक्षकों से मुलाकात की और कहा कि उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव होता है। इसके बाद कर्नाटक सरकार ने मानसून सत्र में रोहित वेमुला एक्ट को पेश करने की घोषणा भी की कर दी।

जानकारों का तो यहां तक कहना है कि सामाजिक न्याय की आड़ लेकर इस बिल में जिन-जिन वर्गों को शामिल किया गया है वो असल में कॉन्ग्रेस की अहिन्दा वोट बैंक की राजनीति का एक हिस्सा है। कॉन्ग्रेस की रणनीति कर्नाटक में हमेशा से 'अहिन्दा' यानी अल्पसंख्यक, ओबीसी और दलित वोटबैंक को मजबूत करने को लेकर सामने दिखी है। 'अहिन्दा' शब्द सबसे पहले कॉन्ग्रेस के नेता देवराज उर्स ने दिया था। बाद में सिद्धारमैया ने इससे अपनी सियासी पहचान स्थापित कर ली। इसी रणनीति के तहत 2015 की जनगणना में ओबीसी और मुस्लिम आरक्षण बढ़ाने की सिफारिश की गई थी।

कर्नाटक में मुस्लिम आबादी 18.08 प्रतिशत है और वो ओबीसी में सबसे बड़ा समूह है। कॉन्ग्रेस का मानना है कि जितना वह मुस्लिमों और ओबीसी को आरक्षण देगी, उतना ही पार्टी का वोटबैंक मजबूत होता जाएगा। बताया जा रहा है कि कर्नाटक में जातिगत जनगणना का मुद्दा कॉन्ग्रेस के लिए दो-धारी तलवार बन गया है। एक तरफ पार्टी अपने 'सामाजिक न्याय' के नैरेटिव को बनाए रखना चाहती है, जिसके तहत वो ओबीसी, मुस्लिम और दलित वोटबैंक को साधने की कोशिश कर रही है। दूसरी तरफ लिंगायत और वोक्कालिगा जैसे प्रभावशाली समुदायों का विरोध उसे बैकफुट पर ले आया है। डीके शिवकुमार का बयान कि "हम हर समुदाय को साथ लेकर चलेंगे" साफ तौर पर कॉन्ग्रेस की मजबूरी को दिखाता है। राहुल गाँधी जातिगत जनगणना को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सियासी पहचान का हिस्सा बनाना चाहते थे लेकिन अब खुद इस जंजाल में फँसते जा रहे हैं। उनकी पार्टी अब तक न तो 2015 की रिपोर्ट को लागू कर पाई, न ही इसे पूरी तरह खारिज कर पा रही है।

एक ओर भाजपा इसे कॉन्ग्रेस की नाकामी और सियासी ड्रामेबाजी बता रही है तो दूसरी ओर कर्नाटक की जनता के बीच ये सवाल उठ रहा है कि क्या कॉन्ग्रेस सच में सामाजिक न्याय की बात करती है या ये सिर्फ वोटबैंक की राजनीति है? दलित न होते हुए भी रोहित वेमुला के नाम पर विधेयक लाकर कॉन्ग्रेस को भले ही कुछ राजनीतिक लाभ मिल जाए लेकिन इसके कारण सामाजिक न्याय से ज्यादा लोगों के बीच ऊँच-नीच या विभाजन होगा और उन छात्रों के लिए भी परेशानी खड़ी होगी जिन्हें इस एक्ट में किसी भी तरह का संरक्षण नहीं मिला है इसके साथ ही ये बात भी गौर करने वाली है कि कॉन्ग्रेस का लाया ये एक्ट सिर्फ कर्नाटक के साथ साथ हिमाचल प्रदेश और तेलंगाना जैसे कॉन्ग्रेस शासित राज्यों तक भी पहुँच सकता है। वैसे देखा जाय तो जब भी वोट बैंक को साधने के लिए निर्णय लिए गये हैं या ऐसे कोई कानून बनाए गये है, उससे समाज में विद्वेष ही फैला है और जब एक को स्वार्थवश साधा जाता है तो दूसरा नाराज भी होता है। जनता अब जात पात से ऊपर उठकर चलना चाहती है, इसे भी राजनेताओं को समझना चाहिए।

जो 'सार्वजनिक' होकर भी हर भारतवासी के 'व्यक्तिगत' प्रेरणास्त्रोत बने

[भूलाए नहीं जा सकते: स्वराज्य के पहले वैचारिक योद्धा गणेश वासुदेव जोशी]

गणेश वासुदेव जोशी, जिन्हें इतिहास 'सार्वजनिक काका' के नाम से जानता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार के उन अमर नायकों में से एक हैं, जिनके योगदान ने देश की चेतना को नई दिशा दी। 25 जुलाई, 1880 को उनका निधन हुआ, परंतु उनकी विचारधारा, उनकी निर्भीकता और उनके द्वारा स्थापित मूल्य आज भी हमें प्रेरित करते हैं। उनके जीवन का प्रत्येक पहलू—चाहे वह स्वदेशी आंदोलन का प्रारंभ हो, सामाजिक सुधारों के लिए उनका संघर्ष हो, या फिर स्वराज्य की मांग के साथ ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देना हो—एक ऐसी कहानी कहता है जो न केवल इतिहास के पन्नों में, बल्कि हर भारतीय के हृदय में अमर है। उनकी पुण्यतिथि पर हमें उनके जीवन और कार्यों को स्मरण करते हुए यह समझना होगा कि कैसे एक व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति और जनकल्याण की भावना ने देश के भविष्य को आकार दिया।

गणेश वासुदेव जोशी का जन्म 9 अप्रैल, 1828 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। उनके पिता वासुदेव और माता सावित्रीबाई एक साधारण परिवार से थे, और उनके पिता का असमय निधन हो जाने के कारण जोशी जी का बचपन आर्थिक तंगी और चुनौतियों के बीच बीता। उनकी औपचारिक शिक्षा केवल मराठी तक सीमित रही, परंतु उन्होंने स्वाध्याय से अंग्रेजी सीखी और 1865 में 'मुख्तार वकील' की परीक्षा उत्तीर्ण कर पुणे में वकालत शुरू की। वकालत के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक और सार्वजनिक कार्यों में रुचि दिखाई, जो उनके जीवन का केंद्र बन गया। उनके इस समर्पण ने उन्हें 'सार्वजनिक काका' का सम्मानजनक उपनाम दिलाया।

जोशी जी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान 2 अप्रैल, 1870 को 'पुणे सार्वजनिक सभा' की स्थापना थी। यह संस्था उस समय की पहली संगठित राजनीतिक मंचों में से एक थी, जिसने जनता की समस्याओं को ब्रिटिश प्रशासन तक पहुंचाने का कार्य किया। इस सभा में महादेव गोविंद रानाडे जैसे प्रख्यात विचारक भी शामिल थे। सभा ने नमक कर को कम करने, 1876 के भयंकर अकाल में जनता को राहत दिलाने, और किसानों की स्थिति की जांच के लिए आयोग गठित करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। यह सभा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) की स्थापना की प्रेरणा बनी, और इसे 'कांग्रेस की जननी' कहा गया। जोशी जी ने इस मंच के माध्यम से भारतीयों में संगठित चेतना का बीज बोया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना।

उनका एक और क्रांतिकारी योगदान था स्वदेशी आंदोलन का प्रारंभ। 1872 में उन्होंने 'देशी व्यापारोत्तेजक मंडल' की स्थापना की और स्वदेशी वस्तुओं जैसे स्याही, साबुन, मोमबत्ती, और छाते के उत्पादन को प्रोत्साहित किया। उन्होंने पुणे, सतारा, नागपुर, मुंबई और सूरत में सहकारी सिद्धांतों पर आधारित दुकानें खोलने को बढ़ावा दिया और स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनियां आयोजित कीं। आगरा में कॉटन मिल की स्थापना भी उनके प्रयासों का परिणाम थी। 12 जनवरी, 1872 को उन्होंने खादी का उपयोग करने की शपथ ली और जीवनभर उसे निभाया। उनके इस स्वदेशी आंदोलन ने बाद में महात्मा गांधी को खादी और स्वदेशी के प्रचार की प्रेरणा दी। जोशी जी ने स्वदेशी को केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का साधन ही नहीं, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को कमजोर करने की रणनीति के रूप में देखा।

1877 का दिल्ली दरबार गणेश वासुदेव जोशी के साहस और देशभक्ति का सबसे चमकदार अध्याय है। जब ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड लिटन ने क्वीन विक्टोरिया को 'भारत की महारानी' घोषित करने के लिए भव्य दरबार का आयोजन किया, तब जोशी जी ने पूर्ण स्वदेशी खादी वस्त्र पहनकर उस मंच पर भारत के लिए स्वराज्य की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के समान राजनीतिक और सामाजिक दर्जा मिलना चाहिए। यह उस समय की सबसे साहसी मांग थी, जब स्वतंत्रता की बात करना भी विद्रोह माना जाता था। उनके इस वक्तव्य ने न केवल उपस्थित भारतीय राजाओं और जनता को प्रभावित किया, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम की भावी पीढ़ियों के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ।

जोशी जी केवल राजनीतिक कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि सामाजिक सुधारक भी थे। उन्होंने जातिगत भेदभाव, बालविवाह और विधवा विवाह जैसे सामाजिक मुद्दों पर खुलकर विरोध किया। उनकी पत्नी सरस्वतीबाई ने 1871 में 'स्त्री विचारवती' नामक संस्था की स्थापना की, जो महिलाओं के बीच जातिगत भेदभाव को खत्म करने और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए काम करती थी। इस संस्था ने हल्दी-कुंकु जैसे सामाजिक आयोजनों के माध्यम से सभी जातियों की महिलाओं को एकजुट किया। जोशी जी ने स्वयं महाराष्ट्र के कई जिलों में किसानों की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण किया और उनकी समस्याओं को प्रशासन तक पहुंचाया।

उनकी निर्भीकता का एक और उदाहरण क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फडके के मुकदमे में उनकी वकालत थी। जब पुणे में कोई भी वकील फडके का केस लड़ने को तैयार नहीं था, तब जोशी जी ने न केवल उनका वकीलपत्र स्वीकार किया, बल्कि निर्भयता से कहा, "फडके को जैसे फांसी पर चढ़ाएंगे, वैसे ही मुझे भी चढ़ाएंगे, इससे ज्यादा वे क्या करेंगे?" यह साहस उस समय के दमनकारी माहौल में अभूतपूर्व था।

जोशी जी का प्रभाव उनके समकालीन और भावी नेताओं पर स्पष्ट दिखता है। उनकी बेटी का विवाह गोपाल कृष्ण गोखले से हुआ, जो स्वयं स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता बने। गोखले और तिलक जैसे नेताओं ने जोशी जी के स्वदेशी और संगठित चेतना के विचारों को आगे बढ़ाया। गांधी जी ने भी स्वीकार किया कि स्वदेशी और खादी का उनका अभियान जोशी जी जैसे अग्रदूतों से प्रेरित था।

25 जुलाई, 1880 को हृदय रोग के कारण गणेश वासुदेव जोशी का निधन हुआ। उनके जीवन के 52 वर्ष भारत के लिए समर्पित रहे। उन्होंने न तो हथियार उठाए, न ही हिंसक विद्रोह किया, परंतु उनके विचारों की ताकत ने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी और भारतीय जनता में स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की चेतना जगाई। उनकी पुण्यतिथि हमें यह स्मरण कराती है कि सच्चा राष्ट्रनिर्माण केवल युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि विचारों, साहस और सामाजिक सुधारों के मंच पर भी होता है। आज, जब हम उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, हमें यह आत्ममंथन करना होगा कि क्या हम उनके दिखाए मार्ग पर चल रहे हैं? उनकी स्वदेशी की भावना, सामाजिक समानता की लड़ाई और स्वराज्य का सपना आज भी प्रासंगिक है। गणेश वासुदेव जोशी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा देशभक्त वही है जो न केवल अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े, बल्कि उसके सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए भी समर्पित हो। उनकी पुण्यतिथि हमें प्रेरित करती है कि हम उनके विचारों को जीवित रखें, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को अपनाएं, और एक ऐसे भारत का निर्माण करें जो उनके सपनों का साकार रूप हो। यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी उस महान आत्मा को, जिसने भारत को स्वतंत्रता और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

ब्रिटेन के समझौते से किसको संदेश दे रहे मोदी

राजेश कुमार पासी

प्रधानमंत्री मोदी ब्रिटेन की विदेश यात्रा पर हैं, जहां भारत ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार समझौता करने वाला है।

2022 से इसके लिए भारत सरकार और ब्रिटिश सरकार के बीच बातचीत चल रही थी और अब इस समझौते पर हस्ताक्षर होने जा रहे हैं। बेशक ये समझौता भारत और ब्रिटेन के बीच होने जा रहा है लेकिन इस समझौते से मोदी पूरी दुनिया को एक संदेश देने जा रहे हैं। विशेष तौर पर मोदी इस समझौते के जरिये अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को एक बड़ा संदेश देने जा रहे हैं। जब से भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम हुआ है तब से डोनाल्ड ट्रंप यह राग अलाप रहे हैं कि उन्होंने दोनों देशों के युद्ध विराम करवाया था। भारत सरकार द्वारा अधिकारिक रूप से नकार दिये जाने के बावजूद उनका राग अलापना बंद नहीं हुआ है। उनका कहना है कि उन्होंने दोनों देशों को ट्रेड डील करने की बात कहकर मनाया था। सवाल यह है कि पाकिस्तान ऐसा क्या बनाता है जिससे वो अमेरिका के साथ व्यापार करने जा रहा है।

दूसरा सवाल यह है कि अमेरिका की कई धमकियों के बावजूद भारत ने अमेरिका के साथ व्यापार समझौते की तरफ कदम नहीं बढ़ाए हैं। जो समझौता हुआ ही नहीं, उसके कारण कैसे भारत पाकिस्तान अमेरिकी प्रभाव में युद्ध रोकने के लिए सहमत हो गए। जहां भारत का अमेरिका के साथ अभी तक व्यापार समझौता नहीं हो पाया है तो वहीं दूसरी तरफ तीन वर्षों की मेहनत के बाद ब्रिटेन के साथ भारत का समझौता होने जा रहा है। भारत इस समझौते के जरिये अमेरिका को संदेश दे रहा है कि वो अपने हितों के साथ कोई समझौता नहीं करने वाला है। इस समझौते के जरिये भारत ने सुनिश्चित किया है कि उसके 99 प्रतिशत निर्यात उत्पादों को ब्रिटेन में जीरो डयूटी श्रेणी में रखा जाएगा। भारत पर अमेरिका द्वारा लगातार डेडलाइन देकर समझौता करने का दबाव बनाया जा रहा है लेकिन भारत ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि वो किसी डेडलाइन के डर से समझौता नहीं करने वाला है। भारत अपने हितों को देखते हुए ही अमेरिका के साथ समझौता करेगा।

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने अमेरिका को कहा था कि हम समझौता जरूर करेंगे लेकिन बिना किसी डेडलाइन के करेंगे। उन्होंने कहा था कि इस तरीके से बातचीत की जाएगी तो हमें कोई ट्रेड डील नहीं करनी है। पहले अमेरिका ने 9 जुलाई की डेडलाइन दी थी और अब इसे बढ़ाकर 31 जुलाई कर दिया गया है। अमेरिकी दबाव का नतीजा ये निकला है कि भारत सरकार ने अन्य देशों के साथ व्यापार करने के लिए जो शर्तें तय की थी, उनके अनुसार अमेरिका के साथ बातचीत नहीं होने जा रही है बल्कि भारत का कहना है कि जैसे अमेरिका बात करेगा, उससे वैसे ही बात की जाएगी। भारत का अमेरिका को सीधा संदेश है कि वो किसी दबाव में व्यापार समझौता करने वाला नहीं है। भारत और ब्रिटेन के बीच फ्री ट्रेड डील की बातचीत के दौरान ब्रिटेन के तीन प्रधानमंत्री बदल गए लेकिन बातचीत चलती रही। इससे यह भी संदेश जाता है कि ट्रेड डील किन्हीं दो लोगों के बीच नहीं होती बल्कि दो देशों के बीच होती है।

न्यायालय की चेतावनी और समाज का आईना

डॉ. सत्यवान सौरभ

"लव जिहाद" — एक ऐसा शब्द जो न तो भारतीय क़ानून में परिभाषित है, न संविधान में मान्यता प्राप्त, लेकिन फिर भी राजनीतिक मंचों, टीवी डिबेट्स और सड़कों पर सुनाई देने लगा है। अब यह बहस हरियाणा तक भी पहुँच चुकी है, और अदालतों तक भी।

हाल ही में हरियाणा के एक चर्चित केस में अदालत ने स्पष्ट कहा — "हरियाणा में लव जिहाद नामक आंदोलन चल रहा है, जबकि यह शब्द किसी भी वैधानिक दस्तावेज़ में मान्यता प्राप्त नहीं।" इस एक टिप्पणी ने हमें आईना दिखा दिया कि कैसे हम एक ऐसी अवधारणा के पीछे दौड़ रहे हैं, जिसकी जड़ें सच्चाई में कम और सियासत में अधिक गहराई से जुड़ी हैं।

कोर्ट ने कहा कि समाज में ₹लव जिहाद₹ के नाम पर एक तरह का भावनात्मक आंदोलन शुरू हो गया है, जिसमें तथ्यों और साक्ष्यों को ताक पर रखकर केवल आरोपों के आधार पर पूरे समुदायों को कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है।

यह टिप्पणी एक ऐसे केस में आई जहाँ एक युवती ने एक मुस्लिम युवक पर धोखे से शादी का झांसा देकर यौन संबंध बनाने का आरोप लगाया था। मामला बेहद संवेदनशील था क्योंकि युवती नाबालिग थी, और लड़के पर धर्म बदलवाने के लिए दबाव डालने का आरोप भी लगा।

लेकिन कोर्ट ने पूरी गवाहियों और तथ्यों के विश्लेषण के बाद पाया कि आरोपों और वास्तविकता में बड़ा अंतर था। अदालत ने यह भी साफ किया कि किसी रिश्ते के टूटने या उसमें धोखे की संभावना को धार्मिक षड्यंत्र में बदल देना न केवल न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध है, बल्कि सामाजिक सौहार्द के लिए भी घातक है।

यह शब्द मूलतः कुछ दक्षिणपंथी संगठनों द्वारा प्रचारित किया गया, जिसमें यह दावा किया गया कि मुस्लिम युवक योजनाबद्ध रूप से हिन्दू लड़कियों को प्रेमजाल में फँसाकर उनका धर्मांतरण कर रहे हैं। हालाँकि, अब तक न तो कोई राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (NIA), न ही कोई न्यायालय इस शब्द को सिद्ध कर पाया है। यह केवल एक भावनात्मक, धार्मिक और सांप्रदायिक डर की उपज है, जिसका कोई संवैधानिक आधार नहीं है।

फिर भी, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा और कुछ अन्य राज्यों में इस शब्द के आधार पर विशेष कानून बनाए गए हैं, जो विवाह के नाम पर धर्मांतरण को अपराध घोषित करते हैं। लेकिन इन कानूनों की आलोचना भी होती है क्योंकि अक्सर इन्हें प्रेम-विवाहों और अंतरधार्मिक संबंधों को निशाना बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया है।

समाज की विडंबना देखिए — जहाँ एक ओर हम लव मैरिज, सेक्युलरिज़्म, स्वतंत्रता की बातें करते हैं, वहीं दूसरी ओर जब दो अलग धर्मों के युवक-युवती प्रेम करें, तो उन्हें शक की नज़र से देखा जाता है।

क्या प्रेम को मज़हब के चश्मे से देखना सही है?

क्या हर मुस्लिम लड़का जो हिन्दू लड़की से प्रेम करे, वह ₹जिहादर कर रहा है?

क्या हम इतने असहिष्णु हो गए हैं कि अब प्रेम भी जाति, धर्म और पंथ का गुलाम हो गया है?

"लव जिहाद" जैसे शब्द मीडिया के लिए मसाला हैं और राजनेताओं के लिए हथियार। टीवी चैनलों की बहसें इस मुद्दे पर गर्म रहती हैं, लेकिन कोई भी यह सवाल नहीं करता कि आखिर इस शब्द की वैधानिक स्थिति क्या है।

राजनीतिक मंचों पर इसे ₹हिन्दू अस्मिता₹ का मामला बनाकर भुनाया जाता है।

जनता को डराया जाता है कि उनके घरों की बहुएं-बेटियाँ टारगेट हो रही हैं, और धर्म खतरे में है।

जबकि सच यह है कि ज़्यादातर केस में ऐसे संबंध सहमति पर आधारित होते हैं — और यदि कोई धोखा होता भी है, तो उसे व्यक्तिगत अपराध की तरह देखना चाहिए, न कि धार्मिक युद्ध की तरह।

हमें यह समझना होगा कि किसी भी प्रेम या संबंध को मज़हबी नजरिए से देखना, हमारे लोकतंत्र, संविधान और सामाजिक ताने-बाने के खिलाफ है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ
मीरा ने कृष्ण को प्रेम किया,
हीर रांझा, सलीम अनारकली,
अमर अकबर एंथनी जैसे पात्रों ने सहिष्णुता को जीया।

वहाँ आज का समाज यह सोच ले कि दो मजहबों के लोगों का प्रेम ₹षड्यंत्र₹ है, तो यह मानवता का पतन है।

हरियाणा की अदालत की यह टिप्पणी सराहनीय है, क्योंकि यह भावनाओं नहीं, तथ्यों पर आधारित निर्णय है।

जब पूरा समाज प्रचार और अफवाहों में उलझा हो, वहाँ न्यायालयों का यह विवेकपूर्ण रुख लोकतंत्र की रक्षा करता है।

न्यायमूर्ति का यह कहना —
"सच को तोलना ही होगा, पूर्वाग्रह से नहीं"
— यह सिर्फ कानूनी निर्देश नहीं, एक सामाजिक चेतावनी है।

हरियाणा जैसे राज्य, जहाँ जातिवाद, ऑनर किलिंग और महिला असुरक्षा पहले से ही विकराल हैं — वहाँ ₹लव जिहाद₹ जैसे शब्दों का प्रचार समाज को और अधिक तोड़ देगा।

हमें तय करना होगा —
क्या हम ऐसा समाज बनाना चाहते हैं जो प्रेम से डरे,
या ऐसा जहाँ प्रेम को समझा जाए?

क्या हम औरत को अपनी ₹जातीय संपत्ति₹ मानकर उसकी स्वतंत्रता छीनना चाहते हैं,
या एक स्वतंत्र नागरिक की तरह उसकी इच्छा का सम्मान करना सीखना चाहते हैं?

"लव जिहाद" एक राजनीतिक भाषा का शब्द है, न कि संवैधानिक सच्चाई।

हरियाणा की अदालत ने इस भ्रम का पर्दाफाश कर हमें चेताया है —

कि रिश्ते, प्रेम, विवाह जैसे निजी मामलों को धार्मिक युद्ध का मोर्चा मत बनाइए।

अगर किसी संबंध में धोखा है — तो उसका हल क़ानून में है।

लेकिन अगर हर प्रेम पर धर्म का चश्मा चढ़ाया जाएगा,

तो समाज में न प्रेम बचेगा, न भरोसा —

सिर्फ नफ़रत, भय और असहिष्णुता की जड़ें और गहरी होंगी।

प्रेम में प्रश्न नहीं होते, पूर्वाग्रह नहीं होते, संप्रदाय नहीं होता — वहाँ सिर्फ दो इंसान होते हैं जो एक-दूसरे को चुनते हैं।

उन्हें मज़हब में मत तोलिए, इंसानियत में समझिए।

शालीमार-संवलपुर महिमा गोसाईं एक्सप्रेस पटरी से उतरी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : शालीमार-संवलपुर महामी गोसाईं एक्सप्रेस पटरी से उतर गई। ट्रेन गुरुवार सुबह 9:22 बजे संबलपुर जंक्शन और सिटी स्टेशन के बीच पटरी से उतर गई। ईस्ट कोस्ट रेलवे ने जानकारी दी है कि एक जनरल डिब्बा पटरी से उतर गया है ।खबर है कि इसमें कोई हताहत नहीं हुआ। हालाँकि, दुर्घटना के कारण उसी लाइन पर रेल यातायात प्रभावित हुआ है। ईस्ट कोस्ट रेलवे के अधिकारी और तकनीकी दल मौके पर पहुँच गए हैं और मरम्मत का काम शुरू कर दिया है। दुर्घटना का कारण अभी स्पष्ट नहीं है। रेलवे विभाग मामले की जाँच कर रहा है।

वर्तमान दौर के रिश्ते

डॉ. सत्यवान सौरभ

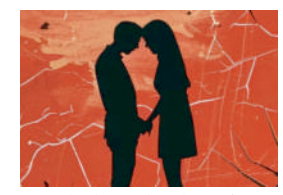

छूट गया जो एकाकी पथ पर,
था कभी आँगन का दीप,
अब वह अनचाहा अजनबी है,
जिसकी प्रतीक्षा नहीं समीप।

घर की धूप नहीं थमती अब,
उसके नाम की चौखट पर,
माँ के आँचल की छाया भी
किरणों-सी बिखरी तट पर।

रिश्ते अब नहीं थामते हाथ,
सिर्फ उत्सवों में मुस्काते हैं,
जिस पीड़ा में साँझ सिसकती है,
उसे सब मौन गंवाते हैं।

दरकते शब्दों के नीचे
कुछ कोरे व्यवहार बचे हैं,
बाँट के मन के आँगन को
अब सम्बन्ध नहीं, हिस्से बचे हैं।

माँ के अधरों पर आशीष नहीं,
केवल संयम की परछाई है,
और पिता की आँखों में सपने नहीं,
एक बुझती सी गहराई है।

जिस घर में भावों की पूजा थी,
अब तर्कों की दीवारें हैं,
हर रिश्ता एक समीकरण है,
हर आलिंगन में धारें हैं।

जब मदद की अपील भी मार्केटिंग हो जाए: करुणा का डिजिटल व्यापार

[मदद की पोस्ट या पोस्ट की मदद? सोशल मीडिया पर करुणा का असली चेहरा]

सोशल मीडिया पर एक तस्वीर वायरल हो रही है - एक माँ अपने बीमार बच्चे को गोद में लिए, आँखों में आँसू और हाथों में मदद की गुहार लिए। कैप्शन में लिखा है, मेरे बच्चे को बचाने के लिए बस 1,00,000 रुपये चाहिए। आपकी उंगलियाँ स्क्रीन पर रुकती हैं। दिल पसीजता है। आप 'शेयर' का बटन दबाते हैं, शायद कुछ रुपये भी ट्रांसफर कर देते हैं। फिर अगली पोस्ट पर स्क्रॉल करते हैं। लेकिन रुकिए, क्या आपने वाकई उस बच्चे की जान बचाई? या सिर्फ अपनी डिजिटल संवेदनशीलता का प्रदर्शन किया? यह सवाल आज के सोशल मीडिया युग में हर उस शख्स से है, जो खुद को वर्चुअल दानवीर मानता है।

डिजिटल युग ने हमें एक ऐसा मंच सौंपा है, जहाँ करुणा महज एक क्लिक में लहर बन जाती है। एक पोस्ट—किसी गरीब के ऑपरेशन की गुहार—लाखों दिलों तक तुरंत पहुँचती है। भारत में, जहाँ 2025 तक 90 करोड़ से ज्यादा इंटरनेट यूजर्स होंगे (स्टैटिस्टा, 2024), सोशल मीडिया ने मदद की पुकार को बुलंद रफ्तार दी है। क्राउडफंडिंग मंच जैसे केटो और मिलाप ने 2023 तक लाखों लोगों को करोड़ों रुपये की सहायता पहुँचाई (केट्टो एनुअल रिपोर्ट, 2023)। ऐसी मिसालें हैं, जहाँ एक अनजान रीट्वीट ने जिंदगियाँ बदलीं—2022 में दिल्ली के एक बच्चे के लिए ट्विटर पर 16 करोड़ रुपये का इंजेक्शन जुट गया। ये कहानियाँ चीख-चीखकर बताती हैं कि सोशल मीडिया जान बचा सकता है।

लेकिन इस चमकते सिक्के का दूसरा रुख भी है। हर पुकार सच्ची नहीं। 2021 में दिल्ली पुलिस ने फर्जी क्राउडफंडिंग घोटाले का पर्दाफाश किया, जहाँ पुरानी तस्वीरों और जाली मेडिकल रिपोर्ट्स से लाखों रुपये लूटे गए (टाइम्स ऑफ इंडिया, 2021)। जब हम बिना सोचे 'शेयर' बटन दबाते हैं, तो क्या हम अनजाने में धोखे की आग को हवा दे रहे हैं? यह सवाल हमारी डिजिटल करुणा की हकीकत पर चोट करता है। एक मार्मिक तस्वीर, कुछ दर्द भरे शब्द—और हमारा 'वर्चुअल दानवीर' जाग उठता है। लेकिन क्या हमारी यह सहानुभूति वाकई जरूरतमंद तक पहुँचती है, या सिर्फ स्क्रीन पर सजकर रह जाती है?

सोशल मीडिया ने हमें तात्कालिक संतुष्टि का गुलाम बना दिया है। किसी मदद की पोस्ट को लाइक, शेयर, या चंद रुपये भेजते ही हमें लगता है—बस, 'नेक काम' हो गया। लोग दान के स्क्रीनशॉट को इंस्टाग्राम स्टोरी या व्हाट्सएप स्टेटस पर सजा देते हैं, जैसे यह उनकी संवेदनशीलता का तमगा हो। लेकिन क्या यह करुणा वाकई मदद बनकर जरूरतमंद तक पहुँचती है? प्यू रिसर्च (2022) के एक अध्ययन के मुताबिक, 60% से ज्यादा लोग दान करने के बाद यह नहीं देखते कि उनका पैसा कहाँ गया। यह 'दिखावटी करुणा' का दौर है, जहाँ मदद से ज्यादा उसका प्रदर्शन चमकता है।

एक गहरा सवाल और है—क्या हमारी यह मदद सबके लिए बराबर है? सोशल मीडिया पर वही पुकार गूँजती है, जो दिल को झकझोर दे, जिसमें मार्मिक तस्वीरें हों, या जो चतुराई से 'पैकेज्ड' हो। लेकिन जो स्मार्टफोन से वंचित हैं, जो अपनी कहानी को वायरल नहीं कर सकते, उनकी चीख कहाँ गुम होती है? एक गरीब मजदूर, जो अपने बच्चे की दवा के लिए जूझ रहा है, मगर डिजिटल दुनिया से बाहर है—क्या उसकी जरूरत कमतर है? यह डिजिटल युग का कड़वा सच है: मदद अब 'वायरल होने' की रेस बन चुकी है। जो चिल्ला सकता है, वही सुना जाता है। जो चुप है, वह अनसुना रह जाता है।

तो क्या हमें सोशल मीडिया की मदद की पुकारों को अनसुना कर देना चाहिए? कतई नहीं। जवाब है—सतर्कता और जिम्मेदारी। किसी अपील को शेयर या दान करने से पहले उसकी सच्चाई परखें। क्या पोस्ट में दिए नंबर, बैंक डिटेल्स, या मेडिकल दस्तावेज़ भरोसेमंद हैं? क्या यह अपील केटो, मिलाप, या गिवइंडिया जैसे विश्वसनीय क्राउडफंडिंग मंचों से जुड़ी है? ये प्लेटफॉर्म पारदर्शिता और जवाबदेही का भरोसा देते हैं, ताकि आपका पैसा सही हाथों में पहुँचे और आप देख सकें कि आपका योगदान जिंदगियाँ कैसे बदल रहा है। मिसाल के तौर पर, मिलाप ने 2023 में 50,000 से ज्यादा अभियानों के लिए 800 करोड़ रुपये से अधिक जुटाए, जिनमें 90% से ज्यादा राशि सत्यापित जरूरतमंदों तक पहुँची (मिलाप इम्पैक्ट रिपोर्ट, 2023)।

लेकिन सिर्फ़ डिजिटल दुनिया में न रुकें। अपने आसपास की ओर देखें—वहाँ कई चुपके से मदद माँगते चेहरे हैं, जो सोशल मीडिया की चकाचौंध से कोसों दूर हैं। किसी पड़ोसी की दवा, किसी बच्चे की किताब, या किसी गरीब परिवार का राशन—ये छोटे कदम असली बदलाव बुनते हैं। सच्चा दान वही, जो बिना तालियों की चाह के चुपके से हो। जैसा महात्मा गांधी ने कहा, ₹आपके काम का मूल्य तभी, जब वह दूसरों के लिए उपयोगी हो।₹ और यह उपयोगिता तब साकार होती है, जब वह दिखावे की चादर से मुक्त हो।

सोशल मीडिया एक ताकतवर पुल है, जो हमें जोड़ता है, पर यह तलवार की तरह दोधारी भी है। यह भावनाओं का बाज़ार बन गया, जहाँ करुणा को लाइक्स और शेयर्स की कसौटी पर कसा जाता है। हमें यह तय करना है कि हमारी संवेदना स्क्रीन की चमक में कैद न रहे। असली मदद वही, जो किसी की जिंदगी में रोशनी बिखेरे, बिना किसी पोस्ट या स्टोरी की तड़क-भड़क के। जब आप किसी अनजान की मुस्कान में अपने योगदान की चमक देखेंगे, तभी आपकी करुणा सच्ची साबित होगी। अब वक्त है 'वर्चुअल दानवीर' की इस झूठी छवि को चकनाचूर करने का। हमें सतर्क, जिम्मेदार, और वास्तविक बनना है। डिजिटल सहानुभूति को ठोस सहायता में ढालना है। हमारी करुणा का असली इम्तिहान तब नहीं, जब हम स्क्रीन पर उंगलियाँ नचाते हैं, बल्कि तब, जब हम चुपके से, सच्चे दिल से किसी की जिंदगी संवारते हैं। यही वह पल होगा, जब हम सच्चे 'करुणा नायक' बनेंगे—और यही हमारी मानवता की सबसे बड़ी जीत होगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बीजद ने अविश्वास प्रस्ताव पर कहा, अविश्वास प्रस्ताव पर कोई फैसला नहीं हुआ है

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बालासोर एफएम कॉलेज के छात्र की आत्महत्या की घटना ने राज्य की राजनीति में उथल-पुथल मचा दी है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) अध्यक्ष भक्त चरण दास द्वारा अविश्वास प्रस्ताव की घोषणा पर प्रतिक्रिया देते हुए, बीजू जनता दल (बीजद) के उपाध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्रा ने कहा कि विधानसभा में अभी तक अविश्वास प्रस्ताव पर कोई फैसला नहीं हुआ है।उन्होंने स्पष्ट किया, इस संबंध में अंतिम निर्णय विधानसभा सत्र की अधिसूचना जारी होने के बाद विधायक दल की बैठक में लिया जाएगा। मिश्रा ने आगे कहा, बीजद ने हमेशा महिलाओं के लिए लड़ाई लड़ी है और महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की निंदा की है। बालासोर की घटना बेहद दुखद है और हम इसकी

न्यायिक जाँच की माँग करते हैं।
कांग्रेस ने अविश्वास प्रस्ताव की माँग की, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्त चरण दास ने एक प्रेस वार्ता में राज्य सरकार की कड़ी आलोचना की और कहा, 'बालासोर एफएम कॉलेज की छात्रा द्वारा आत्महत्या की घटना बेहद शर्मनाक है। हम सभी इसके लिए शर्मिंदा हैं, लेकिन दुख की बात यह है कि राज्य सरकार को इस पर कोई शर्म नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अब तक मूकदर्शक बनी हुई है और महिला आयोग का गठन करने में विफल रही है। दास ने न्याय के लिए उच्च न्यायालय के किसी वर्तमान न्यायाधीश द्वारा घटना की न्यायिक जाँच की माँग की। दास ने आगे कहा, 'अगर बीजद महिलाओं के न्याय के लिए ईमानदारी से लड़ रही है, तो उन्हें विधानसभा में सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाना चाहिए, हम इसका समर्थन करेंगे। अन्यथा हम स्वयं अविश्वास प्रस्ताव लाएंगे और बीजद इसका समर्थन करेगा।

ओडिशा में बिजली उपभोक्ताओं का शोषण हो रहा है, ओडिशा के लोग राष्ट्रीय औसत से अधिक बिल चुका रहे हैं

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: ओडिशा में बिजली उपभोक्ताओं का शोषण हो रहा है। ओडिशा के निवासी राष्ट्रीय औसत से ज़्यादा बिल चुकाते हैं। कभी घंटों बिजली गुल रहती है तो कभी लोगों के कनेक्शन काट दिए जाते हैं। ऐसे में स्मार्ट मीटर लोगों के लिए एक स्मार्ट रक्षक बनकर उभरे हैं। महासंघ द्वारा उपभोक्ताओं द्वारा धन के दुरुपयोग के आरोपों को लेकर ओडिशा विद्युत नियामक आयोग में शिकायत दर्ज कराने के बाद, आयोग ने इस मामले की सुनवाई के लिए तारीख तय कर दी है।

उपभोक्ताओं और संस्थाओं से शिकायतें और प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए एक नोटिस जारी किया गया है। हालाँकि, स्मार्ट मीटर लगाने के लिए सार्वजनिक नोटिस जारी होने के बाद, ओडिशा विद्युत उपभोक्ता संघ ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। संघ ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे धमकियों से डरे बिना स्मार्ट मीटर न लगवाएँ। इस संबंध में, चेतावनी दी गई है कि एक दिन बाद संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक होगी और जन आंदोलन चलाने का निर्णय लिया जाएगा। इस सरकार की कोई बात नहीं मानता। सवाल यह उठता है कि जब इस सरकार ने पहले ही कहा था कि स्मार्ट मीटर लगाना अनिवार्य नहीं है, तो लोगों को अब नोटिस क्यों दिए जा रहे हैं।

बीजद ने ओआरसी सुनवाई से पहले दिए गए उस नोटिस की आलोचना की है जिसमें कहा गया था कि स्मार्ट मीटर लगाना अनिवार्य है। ओडिशा के निवासी उच्च बिजली बिलों का भुगतान कर रहे हैं। बदले में, पार्टी ने स्मार्ट मीटर नोटिस को बाड़ पर कोड़ा मारने जैसा बताया है। वरिष्ठ बीजद नेता प्रदीप माझी ने चेतावनी दी है कि अगर उपभोक्ताओं का शोषण किया गया तो

एक बड़ा आंदोलन सामने आएगा। इस बीच, भाकपा ने पूछा है कि और कितना लोगों को लूटा जाएगा। इससे पहले, लोगों ने ट्रेलर दिखाया। पार्टी ने कहा कि अब से आम उपभोक्ता बिजली अधिकारियों को अपने गांवों में घुसने नहीं देंगे। बिजली अधिशेष वाले राज्य ओडिशा में बिजली उपभोक्ता इन दिनों कई तरह की परेशानियों से जूझ रहे हैं। ऐसे में स्मार्ट मीटर लगने से बिजली उपभोक्ताओं की चिंता और बढ़ गई है।

श्री आईजी गौशाला में शेड उद्घाटन हुआ

जगदीश सीरवी

बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला बालाजी नगर में हरियाली अमावस्या पर भक्तों ने सपरिवार मे गौ सेवा की। गौशाला नवीन शेड निर्माण का उद्घाटन किया। गौशाला में शेड निर्माण या गायों के संरक्षण हेतु दान दिया जाता।गौ सेवा जीव दया और उसकी आज के युग में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।श्री आईजी गौशाला प्रांगण में राधा कृष्ण व माताजी मंदिर व गौशाला में बड़ी संख्या में गौ भक्तों ने सेवा प्रदान की। गौशाला प्रांगण में भक्तों की भीड़ गौ सेवा के लिए उपस्थित हुई। भजन गायक मोहनलाल भायल, गीरधारीलाल प्रजापत, लक्ष्मण सुथार, शंकरलाल गेहलोत, बबलू, ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, उपाध्यक्ष कालुराम काग, सचिव हुक्माराम सानपुरा,सह सचिव ढगलाराम सेपटा,कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार, भगाराम मुलेवा, मोतीलाल काग, डायाराम लचेटा ,अर्जुनलाल बर्फा, भंवरलाल मुलेवा, प्रकाश चोयल,बाबूलाल मुलेवा ओमप्रकाश पंवार, पवन हाम्बड़, चन्द्र प्रकाश गेहलोत, कानाराम, बाबूलाल लचेटा, नारायणलाल आगलेचा ,भंवरलाल बर्फ़ा, भंवरलाल चोयल माधुराम चोयल,प्रकाश हाम्बड़, ओंकारलाल हाम्बड़, कालुराम काग चितल, अशोक सेपटा,नारायणलाल आगलेचा,चेलाराम चोयल ,लाबुराम , गोपाराम मुलेवा, महेन्द्र सिंह शापुर नगर,मोतीलाल , नारायणलाल बर्फा, विकास शर्मा,भोलाराम पंवार, केसाराम काग,रमेश, जगदीश मालवीया,जगदीश सीरवी, कैलाश सानपुरा, महिला मंडल मैना पंवार, प्रेमा सीरवी,मांगीबाई मुलेवा, तुलसी मुलेवा आदि ने भाग लिया। सुरेश सीरवी, मुकेश प्रजापत, चंगीचेला, अशोक कुमावत, नाथूराम कुमावत, मुकेश प्रजापत के हरा घास व्यवस्था रखी थी।भंवरलाल चोयल,माधुराम चोयल, नेमीचंद चोयल द्वारा महा प्रसादी का आयोजन किया गया।गौशाला में भक्तों ने गौ सेवा का लाभ लिया।

सोमाराम विलेज मेडचल विश्व मंगल गौशाला सोमाराम विलेज में हरियाली अमावस्या का कार्यक्रम सफलतापूर्वक मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज

कार्यक्रम में श्रावन के महीने में भक्तों द्वारा बहुत ही आनंद लिया गया और भजन गायक हेमराज एवं सुरेश कुमार जी के भजनों पर भक्तों ने अपनी नृत्य प्रस्तुति दी।साथ ही साथ अमावस्या के दिन हरी घास की गाड़ी की व्यवस्था महिपाल सीरवी यशपाल सीरवी, नारायण राम विक्रम सुथारएवं नेमीचंद सुथार द्वारा की गई।भोजन प्रसादी के लाभार्थी लक्ष्मी मार्केटिंग कानाजीगुड़ा से लुंबाराम सीरवी, सांवलराम, रमेश, चेतन रहे।गौशाला के अध्यक्ष टीवी सुरेश जी के साथ वेंकट रेड्डी,शांतिलाल, उदय भास्कर, वेनाराम, दलाराम, कालूराम, गोविंद, पेमाराम, अमराराम, मंगनाराम आदि गौभक्त शामिल रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023